बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का निर्माण करना

अध्याय 2 पुराने नियम का समकालिक संश्लेषण

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

© 2012 थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग का समीक्षा, टिप्पणियों या लेखन के लिए संक्षिप्त उद्धृणों के प्रयोग के अतिरिक्त, किसी भी रूप में या धन अर्जित करने के किसी भी साधन के द्वारा प्रकाशक से लिखित स्वीकृति के बिना पुन: प्रकाशित करना वर्जित है। Third Millennium Ministries, Inc., P.O. Box 300769, Fern Park, Florida 32730-0769.

थर्ड मिलिनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलिनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि ***मुफ्त में, पूरी दुनिया के लिये, बाइबल पर आधारित शिक्षा*** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बांटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमिडिया सेमनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिनिलियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवता में द हिस्टरी चैनल © के समान हैं। सन् 2009 में, सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलिनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवाओं की अधिक जानकारी के लिये एवं आप किस प्रकार इसमें सहयोग कर सकते हैं, आप हम से http://thirdmill.org पर मिल सकते हैं।

विषय-वस्तु सूची

पृष्ठ संख्या

१. परिचय 1
२. दिशा-निर्धारण 2
  क. समकालिक 2
  ख. संश्लेषण 3
    1. इनकार 4
    2. अभिपुष्टि 4
  ग. उदाहरण 5
३. ऐतिहासिक जानकारी 6
  क. काव्य 7
    1. दो संसार 7
    2. जानकारी को समझना 8
  ख. ऐतिहासिक विवरण 10
    1. दो संसार 10
    2. जानकारी को समझना 11
४. संश्लेषित संरचनाएँ 15
  क. विविध स्रोत 15
    1. बाइबल के प्रकाशन 15
    2. बाइबल से बाहर के स्रोत 18
  ख. विविध स्तर 20
    1. मूलभूत-स्तरीय संरचनाएँ 20
    2. मध्य-स्तरीय संरचनाएँ 22
    3. जटिल-स्तरीय संरचनाएँ 24
५. उपसंहार 26

बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का निर्माण करना

अध्याय दो

पुराने नियम का समकालिक संश्लेषण

परिचय

मैं ने हाल ही में एक मेज खरीदी जिसके अलग-अलग हिस्सों को जोड़कर बनाया जाना था, और जैसे ही मैंने डिब्बे को खोला, तो उसके बहुत से हिस्से फर्श पर गिर गए। उसके इतने अलग-अलग हिस्से थे कि मैं कह सकता था कि उनमें से एक-एक को लगाने में बहुत समय लगने वाला था। परंतु इन अलग-अलग हिस्सों के बीच एक निर्देश पुस्तिका छिपी हुई थी। अतः मैं बैठ गया और मैंने उसे पढ़ना शुरू किया।

पहले दो पृष्ठ पहले चरण के विषय में थे। अगले पृष्ठ दूसरे चरण के लिए थे। उसके बाद तीसरा चरण आया। जब मैंने उस पुस्तिका को पढ़ लिया, तो मुझे यह जान कर बहुत राहत मिली कि मेज के अलग-अलग हिस्सों को जोड़ने की लंबी प्रक्रिया अलग-अलग चरणों में बँटी हुई थी।

कई रूपों में, तब भी ऐसा ही होता है जब हम पुराने नियम के पवित्रशास्त्र के लंबे इतिहास को समझने का प्रयास करते हैं। परमेश्वर के कार्यों और वचनों, लोगों और स्थानों के बारे में वहाँ इतनी अधिक जानकारी है कि यह कार्य बहुत बड़ा प्रतीत हो सकता है। परंतु यदि हम समकालिक दृष्टिकोण को लें, अर्थात् यदि हम इसके इतिहास को अलग-अलग चरणों में बाँट दें और प्रत्येक चरण पर ध्यान दें जब हम सब बातों को एक साथ जोड़ते हैं, तो हम पाएँगे कि कार्य बहुत अधिक आरामदेह और बहुत अधिक लाभकारी है।

यह हमारी श्रृंखला *बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का निर्माण करना* का दूसरा अध्याय है। हमने इस अध्याय का शीर्षक “पुराने नियम का समकालिक संश्लेषण” दिया है। इस अध्याय में हम यह देखेंगे कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी उन बातों की खोज कैसे करते हैं जिन्हें परमेश्वर ने पुराने नियम के इतिहास में विशेष समयों पर अपने लोगों के समक्ष कदम दर कदम प्रकट किया है।

हमारे पिछले अध्याय में हमने देखा कि ऐतिहासिक रूप से मसीहियों ने पवित्रशास्त्र को समझने के लिए तीन मुख्य रणनीतियों का प्रयोग किया है : साहित्यिक विश्लेषण, अर्थात् बाइबल को एक साहित्यिक चित्रण के रूप में देखना जिसकी रचना कुछ दृष्टिकोणों को दर्शाने के लिए की गई है; विषयात्मक विश्लेषण, अर्थात् पवित्रशास्त्र को एक दर्पण के रूप में देखना जो हमारे समकालिक या पारंपरिक विषयों या प्रश्नों को प्रतिबिंबित करती है; और ऐतिहासिक विश्लेषण, बाइबल को उन ऐतिहासिक घटनाओं की खिड़की के रूप में देखना जिनकी यह जानकारी देती है। हमने यह भी देखा कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञान प्राथमिक रूप से पवित्रशास्त्र के ऐतिहासिक विश्लेषण पर ध्यान केंद्रित करता है, यह विशेष रूप से उन तरीकों को देखता है जिनमें परमेश्वर बाइबल में बताई गईं ऐतिहासिक घटनाओं में सम्मिलित था।

इसी कारणवश, हमने कहा कि “बाइबल आधारित धर्मविज्ञान पवित्रशास्त्र में उल्लिखित परमेश्वर के कार्यों के ऐतिहासिक विश्लेषण से लिया गया धर्मवैज्ञानिक चिंतन है।” बाइबल आधारित धर्मविज्ञान परमेश्वर के कार्यों के पवित्रशास्त्र में दिए गए विवरणों पर ध्यान केंद्रित करता है और उन घटनाओं से मसीही धर्मविज्ञान के लिए निष्कर्षों को निकालता है। इस समीक्षा को ध्यान में रखते हुए, आइए इस अध्याय की ओर मुड़ें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

पुराने नियम के समकालिक संश्लेषण पर आधारित इस अध्याय में हम तीन मुख्य विषयों का अध्ययन करेंगे : पहला, हम "समकालिक संश्लेषण" क्या है, इसके बारे में मूलभूत दिशा-निर्धारण को प्राप्त करेंगे। दूसरा, हम उन तरीकों को देखेंगे जिनमें पुराने नियम के अनुच्छेद समकालिक संश्लेषण में *प्रयुक्त* ऐतिहासिक जानकारी को व्यक्त करते हैं। और तीसरा, हम उन संश्लेषित धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं पर ध्यान देंगे जिनकी खोज पुराने नियम की ऐतिहासिक जानकारी के समकालिक संश्लेषण के द्वारा की गई है। आइए हम अपने विषय के मूलभूत दिशा-निर्धारण के साथ आरंभ करें।

दिशा-निर्धारण

यह समझने के लिए कि "समकालिक संश्लेषण" से हमारा क्या अर्थ है, हम तीन विषयों को देखेंगे। पहला, हम शब्द "समकालिक" को परिभाषित करेंगे। दूसरा, हम शब्द "संश्लेषण" की ओर मुड़ेंगे, और तीसरा, हमारे मन में जो कुछ है हम उसे पवित्रशास्त्र के एक उदाहरण से स्पष्ट करेंगे और न्यायसंगत ठहराएँगे। आइए, शब्द "समकालिक" के अर्थ के साथ आरंभ करें।

समकालिक

शब्द "समकालिक" दो यूनानी शब्दों से निकला है : पूर्वसर्ग *सुन* जिसका अर्थ है "के साथ" या "एक साथ," और संज्ञा *क्रोनोस* जिसका अर्थ है, "समय"। जब शब्द समकालिक को ऐतिहासिक घटनाओं पर लागू किया जाता है, तो यह उन घटनाओं का विवरण देता है जो "समय में एक साथ" या "एक ही समय में" घटित हुई थीं। हम शब्द समकालिक का प्रयोग यह दर्शाने के लिए करेंगे कि कैसे बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी अक्सर पुराने नियम के इतिहास की उन घटनाओं की खोज करते हैं जो एक ही समय में घटित हुई थीं।

इस विचार को दर्शाने के लिए, यह सोचें कि कैसे फिल्म निर्देशक अपनी कहानियों को बताते हैं। सबसे अधिक लोकप्रिय फिल्में आरंभ से लेकर अंत तक कहानी के बहाव को व्यक्त करती हैं। वे दर्शाती हैं कि कैसे एक घटना दूसरी, और फिर आगे की घटनाओं की ओर अग्रसर करती है। यद्यपि फिल्म एक ही है, अर्थात् एक इकाई है, फिर भी इसे दृश्यों नामक छोटे-छोटे भागों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक दृश्य विस्तृत कहानी के एक हिस्से को दर्शाता है। इस भाव में, प्रत्येक दृश्य फिल्म में एक समकालिक अवधि, अर्थात् फिल्म में समय की एक अवधि को प्रस्तुत करता है।

पुराने नियम का समकालिक अध्ययन इसी प्रकार के एक दृष्टिकोण को लेता है। समकालिक संश्लेषण में बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी अपने ध्यान को पुराने नियम के समय की विशेष अवधियों पर ऐसे केंद्रित करते हैं कि मानो वे इसके पूरे इतिहास के बहाव के दृश्य न होकर एक फिल्म के दृश्य हों।

फिर भी, यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि फिल्म में दृश्यों के समान, समकालिक दृष्टिकोण विभिन्न अवधियों के समयों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। कभी-कभी बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी अपेक्षाकृत संक्षिप्त ऐतिहासिक समयों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, परंतु अन्य समयों में वे अपना ध्यान अपेक्षाकृत लंबी अवधियों पर भी लगाते हैं।

हम सामान्य जीवन में भी ऐसा ही करते हैं। कभी-कभी हम ऐसी बातों के विषय में बोलते हैं जो एक ही समय में घटित होती हैं, यद्यपि वे वास्तव में एक लंबे समय में घटित होती हैं। उदाहरण के लिए, मैं कह

सकता हूँ, “कुछ ही पल पहले मैंने अपने मित्र के साथ लंबी बातचीत की,” जो कि एक ही घटना के रूप में लंबी वार्तालाप को दर्शाता है। अन्य समयों में, हम विस्तृत अस्थाई इकाईयों के बारे में बात करते हैं, जैसे कि सब कुछ एक ही समय में घटित हुआ हो। उदाहरण के लिए, हम यह कहने के द्वारा पूरे सप्ताह की गतिविधियों को सारगर्भित कर सकते हैं, “मैंने पिछला सप्ताह पहाड़ों में व्यतीत किया,” या फिर यह कहते हुए पूरे साल को भी सारगर्भित कर सकते हैं, “मैं पिछले वर्ष स्कूल गया था।” बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी इसी तरह के अस्थाई लचीलेपन का प्रयोग करते हैं जब वे पुराने नियम के इतिहास को समकालिक इकाईयों में विभाजित करते हैं। कभी-कभी वे अपने ध्यान को अपेक्षाकृत अल्प अवधि की संरचनाओं पर लगाते हैं और अन्य समयों में इतिहास की दीर्घकालिक अवधि की ओर।

अब, जब तक हम एक पल पर ध्यान नहीं देते, समय इतिहास की प्रत्येक समकालिक अवधि में बीतता जाता है, और समय का इस तरह से बीतना ऐतिहासिक परिवर्तनों का परिचय देता है। कभी-कभी ये परिवर्तन छोटे होते हैं, परंतु अन्य समयों में वे अपेक्षाकृत बड़े या महत्वपूर्ण हो सकते हैं। परंतु चाहे जैसे भी परिवर्तन होते रहें, पुराने नियम के समकालिक दृष्टिकोण उस अवधि को संपूर्ण रूप में देखते हैं। और वे प्राथमिक रूप से उन धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो कि विचाराधीन समय के अंत में स्थापित होते हैं।

उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 22 में अब्राहम द्वारा इसहाक के बलिदान की अपेक्षाकृत छोटी कहानी में कई घटनाएँ घटित होती हैं। परंतु बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी पूछते हैं, “अब्राहम के जीवन के इस भाग को किन धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों ने चित्रित किया है?”

बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी समय की विशाल अवधियों के संबंध में भी बात करते हैं, जैसे कि उत्पत्ति 11-25 में अब्राहम का जीवन - एक ऐसा समय जो 175 वर्षों का है। जब समय की एक बड़ी अवधि विचाराधीन होती है, तब भी वे ऐसे प्रश्न पूछते हैं : “संपूर्ण रूप से अब्राहम के जीवन में कौनसे धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रकट हुए?”

वास्तव में, बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी कभी-कभी पूरे पुराने नियम को एक समकालिक इकाई के रूप में देखते हैं और पूछते हैं : “परमेश्वर ने पुराने नियम के दिनों में क्या किया और कहा?”

“समकालिक” की परिभाषा को देख लेने के बाद, हमें अपनी दूसरी शब्दावली, अर्थात् शब्द “संश्लेषण” की ओर मुड़ना चाहिए।

संश्लेषण

संश्लेषण की विचारधारा को समझना कठिन नहीं है। हम इसका प्रयोग अक्सर प्रतिदिन के जीवन में करते हैं। मूलभूत रूप से, इसका सामान्य अर्थ किसी वस्तु के विभिन्न घटकों को एकीकृत रूप में जोड़ना है।

उदाहरण के लिए, कल्पना करें कि आप एक मित्र के यहाँ भोजन के लिए जाते हैं। आप यह या वह सब खाते हैं। आप किसी को बोलते हुए और किसी अन्य को उसका उत्तर देते हुए सुनते हैं। कोई एक चुटकुला सुनाता है और सब हंसते हैं। कोई देरी से आता है, कोई जल्दी चला जाता है। सभी तरह की बातें होती हैं। अब कल्पना करें कि आप अगले दिन किसी मित्र को वह सब बताते हैं जो भोजन के समय हुआ था। यह असंभाव्य है कि आप वह सब बातें दोहराने का प्रयास करें जो वहाँ हुई थीं। इसकी अपेक्षा, आप संश्लेषण करेंगे, या पूरी सभा का निचोड़ निकल कर बताएँगे।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

कई रूपों में, हम तब ऐसा ही करते हैं जब हम समकालिक संश्लेषण को ध्यान में रखते हुए पवित्रशास्त्र को देखते हैं। हम उन तरीकों का वर्णन करते हैं जिनमें इतिहास की एक विशेष अवधि में प्रकट धर्मविज्ञान के विभिन्न घटक स्पष्ट, तार्किक संरचना में उपयुक्त बैठते हैं। यह समझने के लिए कि समकालिक संश्लेषण एक विशेष समय में पुराने नियम के धर्मविज्ञान की तार्किक संरचना के आंकलन को कैसे सम्मिलित करता है, हम दो विषयों को स्पर्श करेंगे। पहला, हम पुराने नियम के तार्किक चरित्र के प्रचलित इनकार को देखेंगे; और दूसरा, हम इसके तार्किक रूप से स्पष्ट होने की अभिपुष्टि करेंगे। आइए पुराने नियम के तार्किक चरित्र के प्रचलित इनकार के साथ आरंभ करें।

इनकार

बीसवीं सदी के मध्य कई आलोचनात्मक विद्वानों ने दोनों शिक्षण-संकायों में तर्क की भूमिका को दर्शाते हुए बाइबल आधारित धर्मविज्ञान को विधिवत धर्मविज्ञान से अलग करते हुए दर्शाया। यह देखना आसान है कि तर्क की पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान में विशेष भूमिका है। परंतु आलोचना आधारित धर्मविज्ञानियों ने तर्क दिया कि तर्क को बाइबल आधारित धर्मविज्ञान में इतनी मुख्य भूमिका अदा नहीं करनी चाहिए।

यद्यपि इन विचार-विमर्शों की जटिलताएँ इस अध्यास से परे का विषय है, फिर भी हम उनके दृष्टिकोण को एक सहायक रूप में सारगर्भित कर सकते हैं। संक्षेप में, आलोचना आधारित धर्मविज्ञानियों का मानना था कि तर्क उसकी प्राथमिक विशेषता थी जिसे वे "यूनानी मानसिकता" कहते थे, परंतु यह "इब्रानी मानसिकता" के लिए अनजानी बात थी। कई भाषाई और सांस्कृतिक मूल्यांकनों पर आधारित होकर, उन्होंने तर्क दिया कि यूनानियों ने लगभग विधिवत धर्मविज्ञान के समान वैचारिक और तार्किक क्रम पर ध्यान केंद्रित किया। और इसके विपरीत, उन्होंने सुझाव दिया कि इब्रानी मानसिकता प्रत्येक वस्तु को ऐतिहासिक प्रगति के संदर्भ में देखती है। इस दृष्टिकोण से, पुराने नियम ने धारणाओं के बीच तार्किक पद्धतियों या धर्मविज्ञान आधारित संबंधों पर ध्यान केंद्रित नहीं किया। और इसी कारणवश, पुराने नियम के धर्मविज्ञान का संश्लेषण करना इब्रानी बाइबल को गलत रीति से पढ़ना था और उसे एक यूनानी संरचना में जबरदस्ती ढालना था।

अभिपुष्टि

इनकार से अलग, पुराने नियम के तार्किक चरित्र की अभिपुष्टि कम से कम दो आधारों पर स्थापित है। पहला, हाल ही के अध्ययनों ने यूनानी और इब्रानी मानसिकता के बीच के उन विरोधाभासों को ठुकरा दिया है, जिनका सुझाव एक समय में कई बाइबल आधारित धर्मविज्ञानियों ने दिया था। ये मानसिकताएँ कई रूपों में भिन्न थीं, परंतु वे एक दूसरे के समान भी थीं।

दूसरा, पुराने नियम का धर्मविज्ञान तर्क और विवेकपूर्ण विचार के प्रति गहरी रूचि को प्रकट करता है। जीवन को देखने का कोई भी महत्वपूर्ण तरीका सावधानीपूर्ण तार्किक चिंतन से स्वतंत्र नहीं है। अब, बिना किसी संदेह के, पुराने नियम में प्रकट बहुत सी बातें मनुष्यों के लिए रहस्यमयी रहेंगी क्योंकि परमेश्वर के विचार हमारे विचारों से बहुत परे हैं। फिर भी, यह तथ्य हम पर प्रकट की गई बातों के विषय में तार्किक रूप से सोचने के महत्व को नहीं नकारता है। प्रश्न यह नहीं है कि *क्या* पुराने नियम के धर्मविज्ञान में तर्क सम्मिलित है? प्रश्न केवल यह है कि यह *कैसे* समिल्लित है?

यह सच है कि पुराने नियम का धर्मविज्ञान औपचारिक पाश्चात्य दार्शनिक परंपराओं के उन मानकों को लागू नहीं करता जिन्होंने पारंपरिक विधिवत धर्मविज्ञान को बहुत ही गहराई से प्रभावित किया है। उदाहरण के

लिए, पुराना नियम अपेक्षाकृत थोड़े तकनीकी शब्दों का प्रयोग करता है; इसका धर्मविज्ञान विभिन्न प्रकार की शैलियों में व्यक्त किया जाता है; पुराने नियम के विभिन्न लेखकों ने अपने विश्वास के विभिन्न पहलुओं पर बल दिया है; और पुराना नियम कहीं भी धर्मविज्ञान की व्यापक तार्किक पद्धति को प्रस्तुत नहीं करता है।

फिर भी, पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के प्रकाशन निरुद्देश्य, असंबद्ध या विरोधाभासी नहीं है। जैसा कि हम इस अध्याय में आगे देखेंगे, परमेश्वर के प्रकाशनों ने न केवल उसके लोगों को विशेष घटनाओं में अंतर्दृष्टि प्रदान की बल्कि उसके विषय में समझने, व्यवहार करने और महसूस करने के तार्किक और संश्लेषित तरीकों की ओर उनका मार्गदर्शन भी किया।

समकालिक संश्लेषण के इस आधारभूत विचार के साथ, बाइबल में इस दृष्टिकोण के एक उदाहरण को देखना सहायक होगा।

उदाहरण

जब हम पवित्रशास्त्र की ओर देखते हैं, तो हम पाते हैं कि पुराने नियम के पात्रों और लेखकों ने अक्सर पुराने नियम को विभिन्न ऐतिहासिक अवधियों में विभाजित किया और उस धर्मविज्ञान को संश्लेषित किया जो उन्होंने वहाँ पाया। उन्होंने ऐसा बहुत बार किया है, परंतु हमारे उद्देश्यों के लिए हम केवल एक प्रतिनिधि अनुच्छेद को दर्शाएँगे। सुनिए पौलुस ने रोमियों 5:12-14 में क्या लिखा है :

> **इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया। व्यवस्था के दिए जाने तक पाप जगत में तो था, परंतु जहाँ व्यवस्था नहीं, वहाँ पाप गिना नहीं जाता। तौभी आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज्य किया, जिन्होंने उस आदम, जो उस आने वाले का चिह्न है, के अपराध के समान पाप न किया। (रोमियों 5:12-14)**

इन पदों में, पौलुस ने आदम के पाप में गिरने के समय से लेकर सीनै पर्वत पर व्यवस्था दिए जाने तक के समय के साथ एक समकालिक इकाई, अर्थात् इतिहास की एकीय अवधि के रूप में व्यवहार किया। इस अनुच्छेद में उसका मुख्य विषय यह प्रमाणित करना था कि कैसे आदम के पाप के दूरगामी प्रभावों ने मसीह की आज्ञाकारिता के दूरगामी प्रभावों को पहले से प्रकट कर दिया था। और इस बात को स्पष्ट करने के लिए, पौलुस ने आदम और मूसा के समय के बीच की बहुत सी धर्मवैज्ञानिक विशेषताओं को संश्लेषित किया।

पद 12 में पौलुस ने उल्लेख किया कि "एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई।" यहाँ उसने उत्पत्ति 3:14-19 की ओर संकेत किया, जहाँ मनुष्य के पाप के फलस्वरूप मनुष्य की मृत्यु आई। फिर पौलुस ने आदम के पाप में गिरने और सीनै पर्वत के बीच की अवधि को "व्यवस्था के दिए जाने तक" के समय, अर्थात् ऐसे समय के रूप दर्शाया जब लोगों ने दस आज्ञाओं और वाचा की पुस्तक जैसे नियमों को संहिताबद्ध नहीं किया था। उसने यह भी कहा कि इस समय के दौरान लोगों ने "उस आदम . . . के अपराध के समान पाप न किया।" कहने का अर्थ यह है कि उन्होंने परमेश्वर की ओर से विशेष रूप से निर्मित निर्देशों को उस रीति से नहीं तोड़ा था जिस रीति से अदन की वाटिका में आदम ने तोड़ा था।

अब, जब एक बार पौलुस ने यह कहा कि सीनै पर्वत से पहले कोई "व्यवस्था" नहीं थी, तो उसे काल्पनिक संभावना का सामना करना पड़ा : हो सकता है कि आदम और मूसा के समय के बीच रहने वाले लोग

पाप के प्रति निर्दोष थे। यदि उनके पास ऐसे कोई विशेष नियम नहीं थे जिनका वे उल्लंघन कर सकें, तो हम कैसे आश्वस्त हो सकते हैं कि वे पापी थे? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए पौलुस ने उस समय की एक और विशेषता की ओर संकेत किया : "आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने . . . राज्य किया," उसका तर्क यह था कि यदि पुरूष और स्त्रियाँ मृत्यु के श्राप के अधीन थे, तो तार्किक निष्कर्ष के द्वारा उन्हें पापी होना चाहिए था।

इस अनुच्छेद के विस्तृत संदर्भ में पौलुस ने यहाँ तक कहा कि परमेश्वर के प्रति यीशु की आज्ञाकारिता ने आदम के पाप के द्वारा उत्पन्न समस्या का समाधान कर दिया। जिस प्रकार आदम की अवज्ञाकारिता का एक कार्य आदम से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति के लिए मृत्यु को लेकर आया, उसी प्रकार मसीह की आज्ञाकारिता का एक कार्य मसीह से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति के लिए जीवन लेकर आया। और इसी कारणवश, उसने कहा कि आदम यीशु का "एक नमूना" या प्रतीक था।

ध्यान दें कि पौलुस के तर्क ने यहाँ कैसे कार्य किया। पहला, उसने पाप में गिरने के समय से लेकर व्यवस्था के दिए जाने तक के समय को एक अवधि में, और मसीह के समय से लेकर एक वर्तमान तक के समय को दूसरी अवधि के समकालिक बनाया। दूसरा, उसने प्रत्येक अवधि की विभिन्न विशेषताओं को एक तार्किक रूप में बाँधने के द्वारा उसे संश्लेषित किया। सारांश में, उसने वैसा ही किया जैसा जिम्मेदार बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी करते हैं। और उसके नमूने का अर्थ है कि समकालिक संश्लेषण आधुनिक मसीहियों के लिए भी एक वैध क्रिया है।

अब जबकि हमने देख लिया है कि समकालिक संश्लेषण क्या है, और यह दिखा दिया है कि नया नियम इस दृष्टिकोण को वैध ठहराता है, इसलिए हम समकालिक संश्लेषण की रचना की ओर बढ़ने के एक आवश्यक कदम की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं, वह है पुराने नियम की ऐतिहासिक जानकारी को समझने की प्रक्रिया।

ऐतिहासिक जानकारी

जैसा कि हमने पिछले अध्याय में देखा, बाइबल आधारित धर्मविज्ञानियों का मुख्य ध्यान दो तरह की ऐतिहासिक घटनाओं पर होता है : ईश्वरीय कार्य प्रकाशन, अर्थात् वे कार्य जो परमेश्वर ने किए; और ईश्वरीय वचन प्रकाशन, अर्थात् ऐसी बातें जो परमेश्वर और उसके संदेशवाहकों ने कहीं।

इससे पहले कि बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी पुराने नियम की किसी एक अवधि के धर्मविज्ञान को संश्लेषित करें, उन्हें पहले ऐतिहासिक घटनाओं के विषय में जानकारी को एकत्र करना होता है, अर्थात् परमेश्वर के उन कार्यों और वचनों को जो विचाराधीन समय में घटित हुए। ये ऐतिहासिक तथ्य उनके समकालिक संश्लेषण की मूल इकाईयाँ बन गए। अब पहली नजर में, यह काफी आसान कार्य प्रतीत हो सकता है। हम शायद सोचें कि हमें केवल वही दोहराना है जो बाइबल बताती है कि उन विशेष समयों में क्या घटित हुआ था। परंतु जैसा कि हम देखेंगे, बाइबल से ऐतिहासिक जानकारी को एकत्र करने में काफी सावधानी बरतनी पड़ती है।

पुराने नियम में हमें ऐतिहासिक जानकारी की एक क्रमबद्ध सूची नहीं मिलती है। इसकी अपेक्षा, इसमें ऐतिहासिक वर्णन, काव्य, व्यवस्था, बुद्धि साहित्य, वंशावलियाँ, विभिन्न तरह के भजन, भविष्यद्वाणी के वक्तव्य और कई अन्य शैलियाँ पाई जाती हैं। ये सारी शैलियाँ परमेश्वर के कार्यों और वचनों के बारे में जानकारी प्रकट करती हैं, परंतु यह ऐतिहासिक जानकारी प्रत्येक शैली की साहित्यिक विशेषताओं में लिपटी हुई है। और इसी

कारण, बाइबल आधारित धर्मविज्ञानियों को हर तरह के साहित्य से ऐतिहासिक जानकारी को एकत्र करने के तरीकों का पता लगाना होता है।

समय हमें केवल इतनी ही अनुमति देगा कि हम इस प्रक्रिया का अध्ययन साहित्य के केवल दो मुख्य प्रकारों के साथ करें : काव्य और ऐतिहासिक वर्णन। परंतु जो कुछ हम इन शैलियों के बारे मे सीखते हैं, वह हमें उन विषयों के लिए सचेत करेगा जो अन्य शैलियों पर भी लागू होते हैं। आइए उन तरीकों के साथ आरंभ करें जिनमें काव्य ऐतिहासिक जानकारी को दर्शाता है।

काव्य

जब हम पुराने नियम के काव्य के बारे में बात करते हैं तो हमारे मन में भजन संहिता, कुछ बुद्धि साहित्य, पुराने नियम की बहुत सी भविष्यद्वाणी, और अन्य पुस्तकों के छोटे भागों जैसे अनुच्छेद आते हैं। पवित्रशास्त्र के इन भागों से परमेश्वर के कार्यों और वचनों के तथ्यों को समझने के लिए हमें देखना होगा कि काव्य के साहित्यिक गुण ऐतिहासिक जानकारी को कैसे प्रकट करते हैं।

इन बातों में देखने के लिए हम दो विषयों को स्पर्श करेंगे। पहला, हम उन दो संसारों को देखेंगे जिन पर पुराने नियय के काव्य ने सदैव ध्यान दिया है। और दूसरा, हम यह देखेंगे कि कैसे इन दो संसारों का विषय काव्य में ऐतिहासिक जानकारी को समझने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। आइए पहले पुराने नियम के काव्य के दो संसारों को देखें।

दो संसार

पुराने नियम के कवि ऐसे दो भिन्न संसारों में रूचि रखते थे जो हमें इतिहास के बारे में बताते हैं। एक ओर, उन्होंने उस संसार पर ध्यान दिया जिसके विषय में उन्होंने लिखा - जिसे हम “वह/उस संसार” कहेंगे। जब वे उस संसार के बारे में लिख रहे थे, तो उन्होंने परमेश्वर के कार्यों और वचनों के बारे में वस्तुनिष्ठ तथ्यों को प्रदान किया। पहला, काव्य ने अक्सर अतीत की ओर खिड़कियों को खोला।

उदाहरण के लिए, एक जाना-पहचाना काव्यात्मक अनुच्छेद वह गीत है जिसे मूसा और मरियम ने निर्गमन 15:1-21 में लाल समुद्र की घटना के दौरान गाया था। मूसा ने अपने पाठकों को लाल समुद्र की घटना में परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य की ऐतिहासिक जानकारी देने के लिए इस काव्य को आंशिक रूप से निर्गमन की पुस्तक में शामिल किया।

दूसरा, पुराने नियम के काव्य ने अक्सर लेखक के अपने समय से समकालीन ऐतिहासिक जानकारी की ओर खिड़कियों को प्रदान किया। उदाहरण के लिए, भजन 1 परमेश्वर की व्यवस्था पर मनन करने की अनुशंसा करता है। परमेश्वर की व्यवस्था के महत्व को व्यक्त करने के लिए भजनकार ने विश्वासयोग्य सेवकों के लिए परमेश्वर की अविरल आशीषों और पापियों के विरुद्ध उसके दंड की पद्धतियों की ओर ध्यान आकर्षित किया। इस भाव में, भजन 1 ने अपने पाठकों को उस समय की घटनाओं में अंतर्दृष्टि प्रदान की।

तीसरा, कई बार पुराने नियम के कवियों ने अपने पाठकों के ध्यान को भविष्य की ओर मोड़ा। उदाहरण के लिए, यशायाह 40:1-11 में यशायाह ने एक ऐसे समय की भविष्यद्वाणी की जब यहूदा के निर्वासित लोग अपनी भूमि पर वापस लौट आएँगे।

किसी न किसी तरह से, पुराने नियम के काव्य ने अक्सर अतीत, वर्तमान और भविष्य में परमेश्वर के प्रकाशन-संबंधी कार्यों और वचनों के बारे में जानकारी को प्रकट किया। पुराने नियम के कवियों ने अपने पाठकों के संसार पर भी ध्यान दिया, जिसे हम "उनका संसार" कहेंगे। उन्होंने विशेष तरीकों से अपने मूल पाठकों को प्रभावित करने के लिए अपने लेखनों को तैयार करने के द्वारा उनके संसार पर ध्यान केंद्रित किया।

उदाहरण के लिए, निर्गमन 15 में मूसा और मरियम के गीत ने मूसा के आरंभिक पाठकों को बड़े आत्मविश्वास के साथ प्रतिज्ञा की भूमि की ओर बढ़ने के लिए उत्साहित किया। भजन 1 को परमेश्वर की व्यवस्था पर निरंतर मनन के लिए प्रेरित करने हेतु लिखा गया था। और यशायाह 40 की भविष्यद्वाणियों को निर्वासन का सामना कर रहे लोगों को उत्साहित करने के लिए लिखा गया था कि वे प्रतिज्ञा की भूमि में महिमामय रूप से लौटने की आशा को बनाए रखें। पुराने नियम के कवियों ने अपने मूल पाठकों के ध्यान को परमेश्वर के कार्य और प्रकाशन के "उस संसार" की ओर आकर्षित किया ताकि वे "उनके संसार," अर्थात् उनके आरंभिक पाठकों के समय से बात कर सकें।

अब हमें यह पता लगाना चाहिए कि पुराने नियम के काव्य के दो संसार उन तरीकों को कैसे प्रभावित करते हैं जिनमें हम बाइबल के इन भागों से ऐतिहासिक जानकारी को समझ सकते हैं।

जानकारी को समझना

हम आश्वस्त हो सकते हैं कि पुराने नियम के कवियों ने अपने पाठकों को अतीत, वर्तमान और भविष्य के बारे में जो कुछ बताया वह सत्य था। वे परमेश्वर की ओर से प्रेरणा-प्राप्त थे जो केवल सत्य ही बोलता है। परंतु उन्होंने अक्सर इतिहास को ऐसे रूपों व्यक्त किया जो प्रत्यक्ष नहीं थे। और इसी कारण, यह जानने के लिए कि कवि वस्तुनिष्ठ ऐतिहासिक तथ्यों के विषय में वास्तव में क्या बताना चाहते थे, हमें पुराने नियम के काव्य की साहित्यिक परंपराओं को समझना होगा।

पुराने नियम की साहित्यिक परंपराओं का वर्णन करने के बहुत से तरीके हैं, परंतु हमारे उद्देश्यों के लिए, हम केवल चार महत्वपूर्ण विशेषताओं पर ध्यान देंगे। पहली, काव्यात्मक अनुच्छेद असामान्य शब्दावली और वाक्य-विन्यास का प्रयोग करते हैं जिनकी रचना पाठकों का ध्यान उस पर लगाने के लिए की जाती है जो लिखा गया है। दूसरा, पुराने नियम के कवियों ने अप्रत्यक्ष रूप से ऐतिहासिक वास्तविकताओं का वर्णन करने के लिए कई अलंकारों का प्रयोग किया। तीसरा, कवियों ने अपने पाठकों में प्रबल काल्पनिक संवेदी अनुभवों को उत्साहित करने के लिए अपने काल्पनिक चिंतनों को व्यक्त किया। चौथा, उन्होंने अपने पाठकों में संवेदनात्मक प्रतिक्रियाओं को उत्साहित करने के लिए अपनी भावनाओं को व्यक्त किया। ये विशेषताएँ कुछ सीमा तक बाइबल की अन्य शैलियों में भी प्रकट होती हैं, परंतु वे पुराने नियम के काव्य में केंद्रित, मुख्य विशेषताएँ थीं।

यह देखने के लिए कि कैसे इन विशेषताओं ने ऐतिहासिक जानकारी के संप्रेषण को प्रभावित किया, हम उस एक काव्यात्मक अनुच्छेद के एक भाग को देखेंगे जिसका उल्लेख हम पहले ही कर चुके हैं : निर्गमन 15 में लाल समुद्र की घटना के दौरान मूसा और मरियम का गीत। सुनिए निर्गमन 15:6-7 में मूसा ने क्या लिखा है :

हे यहोवा, तेरा दहिना हाथ शक्ति में महाप्रतापी हुआ;
हे यहोवा, तेरा दहिना हाथ शत्रु को चकनाचूर कर देता है।
और तू अपने विरोधियों को अपने महाप्रताप से गिरा देता है;
तू अपना कोप भड़काता, और वे भूसे के समान भस्म हो जाते हैं। (निर्गमन 15:6-7)

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

जैसा कि हम देख चुके हैं, इस अनुच्छेद में मूसा ने इस्राएल द्वारा लाल समुद्र को पार करने की ऐतिहासिक घटना का उल्लेख किया है। फिर भी, ये पद परमेश्वर द्वारा किए गए कार्य का भावशून्य विवरण नहीं देते। उदाहरण के लिए, परमेश्वर का दाहिना हाथ वास्तव में लाल समुद्र पर दिखाई नहीं दिया, यद्यपि मूसा ने कहा था कि परमेश्वर का "दाहिना हाथ शत्रु को चकनाचूर कर देता है।" और मिस्री आग के द्वारा भस्म नहीं हुए थे, यद्यपि परमेश्वर का "कोप . . . उन्हें भूसे के समान भस्म कर देता है।" इसकी अपेक्षा निर्गमन का ऐतिहासिक वर्णन हमें बताता है कि परमेश्वर ने एक शक्तिशाली पूर्वी हवा को भेजा जिसने जल को विभाजित करते हुए इस्राएलियों को सूखी भूमि के ऊपर से पार होने दिया। तब परमेश्वर ने जल को फिर से वापस भेजने के द्वारा पीछा कर रही मिस्रियों की सेना को डूबो दिया जब मिस्री इसे पार कर रहे थे।

अतः मूसा ने परमेश्वर के दाहिने हाथ और मिस्रियों को भूसे के समान भस्म करने वाले उसके कोप के बारे में क्यों बोला? परमेश्वर द्वारा अपने शत्रुओं पर बलशाली आक्रमण के रूप में मूसा ने इस घटना को दर्शाने के लिए परमेश्वर के दाहिने हाथ के पुराने नियम के सामान्य रूपक का सहारा लिया। उसने एक अतिश्योक्ति अलंकार का प्रयोग किया जब उसने मिस्रियों की परिस्थिति की तुलना भस्म होते हुए भूसे के साथ की; यह उनके नाश होने के *माध्यम* को प्रकट करने के लिए नहीं, बल्कि यह दिखाने के लिए था कि कैसे *संपूर्ण और भयानक तरीके* से वे नाश किए गए थे। मूसा अपने पाठकों के मनों और हृदयों में इस घटना के कल्पनाशील अनुभवों को भी उभारना चाहता था। उसने परमेश्वर के लिए अपनी स्वयं की जोशपूर्ण स्तुति को व्यक्त किया और दूसरों को भी ऐसा ही करने के लिए प्रेरित किया। मूसा चाहता था कि उसके काव्य को इस घटना के सच्चे विवरण के रूप में लिया जाए, परंतु उसका अभिप्राय यह नहीं था कि इसे शाब्दिक, भावरहित विवरण के रूप में पढ़ा जाए।

जब हम निर्गमन 15:6-7 की काव्यात्मक विशेषताओं को मान लेते हैं, तो हम इसकी ऐतिहासिक जानकारी को काफी आसानी से समझ सकते हैं। हम इन पदों के उन पहलुओं पर निर्भर होते हुए जिन पर हम ध्यान देना चाहते हैं, इनको विभिन्न तरीकों से सारगर्भित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि हमें इस पर इस तरह से ध्यान देना हो कि यह ऐतिहासिक विवरण को जोड़ने के लिए भाषा के अलंकारों का प्रयोग कैसे करता है, तो हम शायद इस तरह से इसे सारगर्भित कर सकते हैं : "परमेश्वर ने लाल समुद्र में मिस्रियों की सेना को चमत्कारी रूप से नाश करने के द्वारा इस्राएल को स्वतंत्र किया।"

यह उदाहरण स्पष्ट कर देता है कि हमें बड़ी सावधानी से पुराने नियम के काव्य का अध्ययन करना चाहिए। हमें इसे उस तरह से नहीं पढ़ना चाहिए जिस तरह से हम गद्य को पढ़ते हैं। इसकी अपेक्षा, हमें काव्य की असामान्य शब्दावलियों और वाक्य-विन्यास, इसके भाषा के अलंकारों, इसके कल्पनाशील विषयों, और इसके संवेदनात्मक प्रभावों को पहचानने के द्वारा ऐतिहासिक जानकारी को निकालना चाहिए। केवल तब ही हम परमेश्वर के उन कार्यों और वचनों की और अधिक यथार्थवादी समझ को प्राप्त कर सकते हैं जो पुराने नियम के धर्मविज्ञान के हमारे समकालिक संश्लेषण में योगदान देते हैं।

अब जबकि हमने कुछ ऐसे तरीकों को देख लिया है जिनमें हम काव्य में ऐतिहासिक जानकारी को समझ सकते हैं, इसलिए हमें पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरण की शैली की ओर मुड़ना चाहिए।

ऐतिहासिक विवरण

हम सभी पुराने नियम की कथाओं या समकालिक कहानियों से पहचान रखते हैं। उत्पत्ति, निर्गमन और कई अन्य पुस्तकें विस्तृत रूप में कथाओं; ऐतिहासिक लोगों, स्थान और घटनाओं की सच्ची कहानियों से मिलकर निर्मित हुए हैं। बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी अक्सर बहुत अधिक मात्रा में इन कथाओं का उपयोग करते हैं क्योंकि उनकी ये कहानियाँ इतिहास के बारे में बहुत अधिक विवरणों को प्रकट करती हैं। वे शब्दों और भाषणों, पात्रों के नामों, स्थानों का उल्लेख करती हैं जहाँ पर ये घटनाएँ और विभिन्न ऐतिहासिक सम्पर्क घटित हुए हैं। ये और कई अन्य कथाएँ समकालिक संश्लेषण के स्रोतों के लिए बहुतायत की सामग्री हैं। परंतु ऐतिहासिक सूचना को समझने के लिए सावधानी से भरी हुई व्याख्या की आवश्यकता यहाँ तक कि कथाओं में भी होती है।

हम ठीक उसी तरह से कथाओं के बारे में विचार-विमर्श करेंगे जैसे हमने काव्य के बारे में किया था। सर्वप्रथम, हम यह देखेंगे कि कथाओं को भी दो संसार के बारे में सूचना प्रदान करने के लिए निर्मित किया गया है। और दूसरा, हम यह जाँच करेंगे कि इस शैली की ऐतिहासिक सूचना को कैसे समझा जाए। आइए सर्वप्रथम हम इन भागों के उन तरीकों को देखें जिसमें बाइबल दो संसारों के बारे में ऐतिहासिक सूचना का उल्लेख करती है।

दो संसार

लगभग कवियों के समान ही, ऐतिहासिक विवरणों के लेखक भी दो संसारों के बीच खड़े हुए। एक ओर, उन्होंने ऐसे संसार के बारे में लिखा जो कि उनके लेखन का विषय था, या "उस संसार" के बारे में। फिर भी, कविताओं के विपरीत, ऐतिहासिक विवरण अधिकतर अतीत पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और वर्तमान या भविष्य का उल्लेख यदा-कदा ही करते हैं। उदाहरण के लिए, मूसा ने आदिकालीन और पूर्वजों से संबंधित इतिहास के बारे में उत्पत्ति की पुस्तक में लिखा, यद्यपि उसका जीवनकाल इतिहास में बहुत बाद में था। पुराने नियम के लेखकों ने अक्सर उन समयों के बारे में लिखा जो उनके जीवनकाल के समय से हजारों वर्षों पहले के थे।

दूसरी ओर, ऐतिहासिक विवरणों के लेखकों ने "उनके संसार," अर्थात् उस संसार के बारे में भी लिखा जिसमें उनके पाठक रहते थे। वे चाहते थे कि उनके पाठक अतीत की घटनाओं के प्रकाश में अपने संसार में कुछ विशेष रूपों में सोचें, कार्य करें और महसूस करें। इसलिए जब मूसा ने आदिकालीन और पूर्वजों से संबंधित अवधियों के बारे मे लिखा, तो उसने उन प्राचीन समयों का वर्णन ऐसे रूपों किया जिन्होंने उसके इस्राएली पाठकों को उनके *अपने* विशेषाधिकारों और उत्तरदायित्वों के बारे में सिखाया। पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरणों के सभी लेखकों ने बाद के समयों में रहने वाले अपने पाठकों के लिए अतीत के बारे में लिखा।

पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरणों की रचना कई विभिन्न तरह के प्रभावों को प्रदान करने के लिए की गई थी। वे महिमा-संबंधी थे, अर्थात् पाठकों की अगुवाई परमेश्वर की स्तुति और प्रशंसा करने में करते थे। वे धर्मवैज्ञानिक थे, अर्थात् वे परमेश्वर के विषय में सत्यों को स्पष्ट करते थे। कुछ राजनैतिक थे, अर्थात् वर्तमान राष्ट्रीय घटनाक्रमों पर ध्यान देते थे, और साथ ही साथ तर्कपूर्ण भी थे, अर्थात् झूठी शिक्षाओं का विरोध करते थे। वे नैतिक भी थे, अर्थात् यह स्पष्ट करते थे कि परमेश्वर के लोगों को कैसे रहना चाहिए। वे उत्साहवर्धक थे, अर्थात् हर तरह के विश्वासयोग्य प्रत्युत्तर को उत्साहित करते थे।

संक्षेप में, पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरण *उपदेशात्मक* थे। उन्हें आरंभिक पाठकों को उनके जीवनों के विषय में *शिक्षा* देने के लिए रचा गया था। अब ऐतिहासिक विवरण की शैली में यह अधिकांश

उपदेशात्मक उद्देश्य अप्रत्यक्ष था; लेखकों ने अपने पाठकों से अपेक्षा की थी कि वे उनकी कहानियों से धर्मवैज्ञानिक सिद्धांतों को प्राप्त करें। फिर भी, यह उपदेशात्मक पहलु बहुत ही सुविचारित था। लेखकों ने सदैव अपने पाठकों को उनके जीवनों के विषय में सिखाने के लिए लिखा था।

इन दो संसारों को ध्यान में रखते हुए, अब हमें उन तरीकों की ओर मुड़ना चाहिए जिनमें हम पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरणों से ऐतिहासिक जानकारी को समझ सकते हैं।

जानकारी को समझना

दुर्भाग्य से, आधुनिक सुसमाचारिक लोग अक्सर पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरणों के आधुनिक पत्रकारिता संबंधी ऐतिहासिक विवरणों जैसा होने की अपेक्षा करने की गलती कर बैठते हैं। 17वीं सदी की यूरोप की जागृति से लेकर, कई इतिहासकारों ने विज्ञान-संबंधी कड़ाई के मानकों को लिखित ऐतिहासिक लेखों पर लागू करने का प्रयास किया है। इस दृष्टिकोण में, इतिहासकारों को रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान जैसे विज्ञानों में उनके समकक्ष लोगों जैसा सटीक होने का प्रयास करना आवश्यक है।

इन कड़े मानकों को सारगर्भित करने के बहुत से तरीके हैं, परंतु हम कह सकते हैं कि इस दृष्टिकोण में विश्वसनीय ऐतिहासिक लेखों को व्यापक, सटीक और वस्तुनिष्ठ होना आवश्यक है। कहने का अर्थ यह है कि सच्चे ऐतिहासिक अभिलेख एक संतुलित विवरण देने के लिए किसी भी परिस्थिति के विषय में प्रत्येक महत्वपूर्ण तथ्य को सम्मिलित करेंगे। वे पूरी सटीकता के साथ विवरणों को दर्शाएँगे, या कम से कम यह स्वीकार करेंगे कि उन्होंने ऐसा नहीं किया है। और वे सभी आत्मनिष्ठ मूल्यांकनों से बचेंगे जो पाठकों में पूर्वाग्रह उत्पन्न कर सकते हैं।

अब हम समझ सकते हैं कि ये आधुनिक आदर्श क्यों विकसित हुए। आखिरकार, जब इतिहासकार एक सीमा तक इन मानकों तक पहुँच नहीं पाते हैं, तो तथ्य और कल्पना को एक साथ मिलाकर भ्रमित होना बहुत आसान होता है। फिर भी, पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरणों के लेखकों ने इन आधुनिक आदर्शों का पूरी तरह से अनुसरण नहीं किया था। अब, उन्होंने धार्मिक कल्पनाओं का प्रचार नहीं किया। और न ही उन्होंने ऐतिहासिक त्रुटियों या बनावटी बातों को तथ्यों के रूप में प्रस्तुत किया। परंतु उन्होंने ऐसे तरीकों से लिखा जो उनके उपदेश-संबंधी उद्देश्यों के द्वारा सुनिश्चित किए गए थे, न कि हमारी आधुनिक संवेदनाओं के द्वारा।

यह देखने के लिए कि यह कैसे सही है, आइए हम ऐसे तीन आधुनिक मानकों को संक्षेप में देखें जिन्हें अक्सर गलत रूप में पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरणों पर लागू किया जाता है, हम इस विचार के साथ आरंभ करेंगे कि ऐतिहासिक लेखों को व्यापक होना चाहिए। सरल रूप में कहें तो, पुराने नियम की कहानियाँ उतनी ही व्यापक थीं जितनी वे उनके लेखकों के उपदेश-संबंधी उद्देश्य के लिए उपयुक्त थीं। उन्होंने प्रत्येक महत्वपूर्ण तथ्य को सम्मिलित नहीं किया।

इतिहास की पुस्तक में से एक उदाहरण पर विचार करें। जब इतिहास के लेखक ने 2 इतिहास 1-9 में सुलैमान के जीवन के इतिहास को लिखा, तो उसने 1 राजा 1-11 के विवरण का काफी निकटता के साथ अनुसरण किया। परंतु उसने सुलैमान के शासन के प्रत्येक नकारात्मक पहलू को छोड़ दिया। उसने फिरौन की पुत्री और अन्य विदेशी स्त्रियों के साथ सुलैमान के विवाह को, मंदिर में उनके देवताओं के लिए आराधना स्थलों के उसके निर्माण को, और सुलैमान द्वारा प्राप्त गंभीर भविष्यद्वाणीय निंदा के उल्लेखों को छोड़ दिया।

व्यवहारिक रूप से, ये नकारात्मक घटनाएँ बहुत महत्वपूर्ण थीं। आखिरकार, 1 राजा 11:11-12 के अनुसार सुलैमान की विफलताएँ राष्ट्र के विभाजन का कारण बनीं। परंतु इतिहासकार ने अपने उपदेश-संबंधी

उद्देश्य के लिए इनको सम्मिलित न करने का निश्चय किया। यह निश्चित है कि उसके बहुत से पाठक पहले से ही इस जानकारी से अवगत थे, परंतु इतिहासकर उनसे चाहता था कि वे सुलैमान की सकारात्मक उपलब्धियों पर ध्यान केंद्रित करें। और इसके फलस्वरूप, उसने अपने विवरण को सुलैमान की सफलताओं पर केंद्रित किया। पुराने नियम के लेखकों ने प्रत्येक महत्वपूर्ण तथ्य को सम्मिलित करने के प्रति किसी दबाव को महसूस नहीं किया। उन्होंने अच्छे इतिहास लेखन के व्यापकता के आधुनिक मानक को पूरा नहीं किया। परंतु फिर भी, उनके ऐतिहासिक विवरण सच्चे हैं और अतीत के आधिकारिक अभिलेख हैं।

दूसरा, पुराने नियम के लेखक अपने लेखन में उतने सटीक थे जितना उनके उपदेश-संबंधी उद्देश्य के लिए आवश्यक था। सटीकता और सच्चाई के बीच महत्वपूर्ण भिन्नता है। हमारे जीवन में हम प्रत्येक दिन सत्य को गलत रूप से प्रस्तुत किए बिना कई विषयों में सटीकता से बात नहीं करते। जब कोई पूछता है, "समय क्या हुआ है?" हम बिना हिचकिचाए हुए कहते हैं, "दो बजे हैं," जबकि यह और अधिक सटीकता से दो बजकर दो मिनट और बीस सेकंड हो सकता है। जीवन के प्रत्येक पहलू में सटीकता सदैव मात्रा या स्तर का एक विषय रहा है। और जब तक हम उतनी सटीकता से प्रत्युत्तर देते हैं जितनी आवश्यकता हो, तो कोई भी हम पर तथ्यों को गलत रूप से प्रस्तुत करने का दोष नहीं लगा सकता। बहुत रूपों में, इसी तरह की बात पुराने नियम के लेखकों पर भी लागू होती थी। वे उतने ही सटीक थे जितना उनके उपदेश-संबंधी लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए आवश्यक था। उदाहरण के लिए उत्पत्ति 1:7 पर ध्यान दें, जहाँ मूसा ने पृथ्वी के वातावरण के बारे में कुछ ऐसे लिखा है :

> **तब परमेश्वर ने एक अंतर बनाकर उसके नीचे के जल और उसके ऊपर के जल को अलग अलग किया; और वैसा ही हो गया। (उत्पत्ति 1:7)**

यहाँ पर मूसा ने इब्रानी शब्द *राकिया* का प्रयोग करते हुए लिखा कि परमेश्वर ने आकाश में एक "अंतर" को बनाया। शब्द *राकिया* का अर्थ एक चपटी ठोस वस्तु जैसी कुछ चीज है। जैसा कि यह अनुच्छेद हमें बताता है, इस ठोस वस्तु ने "नीचे के जल और उसके ऊपर के जल को" अलग अलग कर दिया।

आधुनिक लोगों के रूप में, हम जानते हैं कि पृथ्वी के वातावरण के विषय में मूसा का विवरण वैज्ञानिक रूप से सटीक नहीं है। मूसा ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि आकाश उसे और बहुत से अन्य लोगों को एक छत या नीले काँच या लाजवर्त के तंबू के समान प्रतीत हुआ। सामान्यत: यह माना जाता था कि वर्षा इस ठोस छत में पाए जाने वाले छेदों या चिमनियों के माध्यम से उंडेली जाकर ऊपर के नीले जल से होती है। निस्संदेह, पवित्रशास्त्र का सर्वज्ञानी परमेश्वर यदि चाहता तो पृथ्वी के वातावरण के विषय में मूसा के समक्ष और अधिक वैज्ञानिक रूप में सटीक समझ को प्रकट कर सकता था। परंतु यह वह बात नहीं थी जिसे पवित्र आत्मा चाहता था कि उसके लोग सीखें। मूसा ने प्रकृति की सच्ची अवस्था को गलत तरीके से प्रस्तुत नहीं किया। परंतु उसने उसे असटीक रूप में अवश्य कहा जैसा कि यह उसके समक्ष प्रकट हुआ।

यह जानते हुए, हमें इस बात के प्रति सावधान रहना होगा कि उत्पत्ति 1:7 में मूसा सटीकता के जिस स्तर तक पहुँचना चाहता था, हम कहीं उसे जरूरत से अधिक न समझ लें। हम यह निष्कर्ष निकालने में गलत साबित होंगे कि यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि "परमेश्वर ने आकाश में एक ठोस वस्तु को रखा है" या यह कि "परमेश्वर ने जल को ऊपर और ठोस वस्तु को नीचे रखा है।" इसकी अपेक्षा, इस ऐतिहासिक अभिलेख के हमारे आंकलन को मूसा की असटीकता को मान लेना चाहिए और उसके उपदेश-संबंधी केंद्र पर ध्यान लगाना चाहिए। उदाहरण के लिए, हम उत्पत्ति 1:7 के अनुसार सही रूप से कह सकते हैं कि "परमेश्वर ने आकाश को बनाया;" यह कि "परमेश्वर ने पृथ्वी को रहने योग्य बनाने के लिए आकाश की स्थापना की;" और यह कि "परमेश्वर ने

आकाश को ऐसे बनाया कि वह अच्छा था।" उत्तरदायी व्याख्या को इस तथ्य को स्वीकार करना चाहिए कि मूसा और बाइबल के अन्य लेखकों ने ऐतिहासिक तथ्यों को उतनी ही सटीकता के साथ प्रकट किया जिससे कि वे अपने उपदेश-संबंधी लक्ष्यों को पूरा कर सकें।

सटीकता का प्रश्न भी आगे की ओर बढ़ता है जब हम पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरणों के शब्दों और विचारों के उल्लेखों पर ध्यान देते हैं। केवल एक उदाहरण पर विचार करें। 1 राजा 9:5 और 2 इतिहास 7:18 में हम मंदिर के समर्पण के समय सुलैमान की प्रार्थना के प्रत्युत्तर में परमेश्वर के वचनों के विवरण को पाते हैं। आइए इन अनुच्छेदों की तुलना करें। 1 राजा 9:5 में हम परमेश्वर की ओर से इन शब्दों को पढ़ते हैं :

> **मैं तेरी राजगद्दी इस्राएल के ऊपर सदा के लिए स्थिर करूंगा, जैसा कि मैंने तेरे पिता दाऊद को यह कहकर वचन दिया था, "तेरे कुल में इस्राएल की गद्दी पर विराजने वाले की कमी न होगी।" (1 राजा 9:5, शाब्दिक अनुवाद)**

2 इतिहास 7:18 में हम इन शब्दों को परमेश्वर की ओर से पढ़ते हैं:

> **तो मैं तेरी राजगद्दी को स्थिर रखूंगा; जैसे कि मैं ने तेरे पिता दाऊद के साथ वाचा बान्धी थी, कि तेरे कुल में इस्राएल पर प्रभुता करनेवाला सदा बना रहेगा। (2 इतिहास 7:18, शाब्दिक अनुवाद)**

अब इन दोनों वचनों का विस्तृत संदर्भ स्पष्ट करता है कि ये एक ही ऐतिहासिक घटना को दर्शा रहे हैं, परंतु शब्द सटीक एक जैसे नहीं हैं। 1 राजा में परमेश्वर ने दाऊद को *वचन दिया* था, परंतु 2 इतिहास में उसने दाऊद के साथ *वाचा* बाँधी थी। और 1 राजा में, परमेश्वर ने कहा, "तेरे कुल में इस्राएल की गद्दी पर विराजने वाले की कमी न होगी।" जबकि 2 इतिहास में उसने कहा, "तेरे कुल में इस्राएल पर *प्रभुता* करनेवाला सदा बना रहेगा।" इनमें से कुछ भिन्नताएँ शायद मूलपाठ के संचारण में हुई गलतियों के फलस्वरूप हो सकती हैं, परंतु सारी उस कारण से नहीं थीं। इसकी अपेक्षा, वे इस तथ्य को दर्शाती हैं कि पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरणों की रचना परमेश्वर या किसी और के वचनों और विचारों को पूरी सटीकता के साथ दोहराने के लिए नहीं की गई थी।

वास्तविकता में, न तो राजाओं की पुस्तकों के लेखक और न ही इतिहास की पुस्तकों के लेखक ने पूरी तरह से सटीक होने मंशा रखी थी। जो कुछ उन्होंने लिखा वह ऐतिहासिक रूप से था। उन्होंने उसे गलत रीति से प्रस्तुत नहीं किया जो परमेश्वर ने कहा था। परंतु उनकी सटीकता के स्तर उनके उपदेश-संबंधी लक्ष्यों के द्वारा निर्धारित थे, न कि सटीक अभिलेख-संग्रहण के आधुनिक विचारों से।

परमेश्वर ने जो कहा है उसे उत्तरदायी व्याख्या सटीकता के उन स्तरों के साथ स्पष्ट करती है जो बाइबल के अभिलेखों के साथ मेल खाते हैं। हम आश्वस्त हो सकते हैं कि "परमेश्वर ने कहा कि वह दाऊद के राजवंश को स्थापित करेगा" और यह कि "परमेश्वर दाऊद के साथ बाँधी अपनी वाचा को बनाए रखेगा।" और यह कि "दाऊद का एक वंश सदैव एक इस्राएल पर प्रभुता करेगा।" परंतु इससे अधिक सटीकता को ढूँढना भटकाने वाला हो सकता है।

जब हम समकालिक संश्लेषण में ऐतिहासिक विवरण की शैली की खोज करते हैं, तो हम भिन्न प्रकार की असटीकताओं का सामना करते हैं। लोगों की संख्या, माप, भौगोलिक उल्लेख और इसी तरह की अन्य बातें अक्सर आधुनिक वैज्ञानिक मापदंडों से मेल नहीं खातीं। परंतु आधुनिक सटीकता की इस कमी का अर्थ यह नहीं

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

है कि ये विवरण सच्चे नहीं हैं। इसके विपरीत, हम इस बात के प्रति आश्वस्त हो सकते हैं कि पुराने नियम की कहानियाँ हमें इतिहास के विषय में सच्चाई को बताती हैं। फिर भी, हमें सदैव सावधान रहना चाहिए कि हम उनकी सटीकता जरुरत से अधिक न दर्शाएँ।

अंत में, आइए हम इस तथ्य पर ध्यान दें कि पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरण आधुनिक मापदंडों के द्वारा वस्तुनिष्ठ नहीं हैं। हमारे समय में यह सोचना सामान्य है कि विश्वनीय ऐतिहासिक लेखक अपने विवरणों में वस्तुनिष्ठ बने रहते हैं, और इतिहास के अपने प्रस्तुतीकरण में अपने व्यक्तिगत मतों या घटनाओं के मूल्याँकनों को दर्शाने की अनुमति नहीं देते हैं। परंतु हमें सदैव स्मरण रखना चाहिए कि वस्तुनिष्ठता मात्रा या स्तर का विषय है। जब तक ऐतिहासिक विवरणों को संग्रहित किया गया है, सदैव ऐसे इतिहासकार हुए हैं जिन्होंने अपने आत्मनिष्ठ मतों को इस सीमा तक अपने लेखनों को तोड़ने-मरोड़ने की अनुमति दी है कि उन्होंने वास्तव में इतिहास को गलत रूप से प्रस्तुत किया है। परंतु सबसे अधिक वस्तुनिष्ठ इतिहासकारों में भी ऐसे पूर्वाग्रह रहे हैं हैं कि वे बच नहीं सके। सबसे अंत में, इन पूर्वाग्रहों ने उनके द्वारा दर्शाई गई घटनाओं को प्रभावित किया और इसे भी कि उन्होंने कैसे उनका वर्णन किया। इस भाव में, हम जानते हैं कि ऐतिहासिक लेखन कभी पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ नहीं रहे हैं।

यह बात तब और अधिक सच हो जाती है जब बात पुराने नियम की आती है। परमेश्वर ने पुराने नियम के लेखकों को प्रेरित किया कि वे अपने पाठकों के विचारों को आकार दें। इस लक्ष्य ने उन्हें उसमें प्रभावित किया जिसे उन्होंने छोड़ दिया, जिसे उन्होंने सम्मिलित किया, और जिसे उन्होंने सम्मिलित किया उसका उन्होंने कैसे वर्णन किया। कई बार, इसने उन्हें अपने पूर्वाग्रहों और आंकलनों को साहस के साथ व्यक्त करने के लिए भी प्रेरित किया। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 13:13 के इन शब्दों को सुनिए जहाँ मूसा ने दर्शाया कि लूत ने अपने तंबूओं को सदोम के पास खड़ा किया :

सदोम के लोग यहोवा के लेखे में बड़े दुष्ट और पापी थे। (उत्पत्ति 13:13)

हमें मूसा द्वारा दिए गए सदोम के मूल्यांकन से संकोच नहीं करना चाहिए। उसने नगर के बारे में अपना मत रखा, परंतु उसका नैतिक दृष्टिकोण परमेश्वर की ओर से प्रेरित था और इसलिए सही था। हमें ऐसी बातें कहने के लिए स्वतंत्रता को महसूस करना चाहिए, जैसे कि “लूत दुष्ट लोगों के साथ रहने के लिए परमेश्वर से दूर हो गया,” या “सदोम नगर दुष्ट लोगों से भरा हुआ था।” ये कथन उस समय की ऐतिहासिक परिस्थितियों के बारे में वस्तुनिष्ठ सत्यों को प्रस्तुत करते हैं।

सारांश में, हम बड़े निश्चय के साथ यह कह सकते हैं कि पुराने नियम के ऐतिहासिक विवरणों की रचना इतिहास के लेखन के मापदंडों को पूरा करने के लिए नहीं की गई थी। वे केवल संपूर्ण विश्वसनीय ऐतिहासिक जानकारी को प्रस्तुत करते हैं जो हमें पुराने नियम के धर्मविज्ञान के समकालिक संश्लेषण का निर्माण करने में सक्षम बनाएगी।

पुराने नियम की ऐतिहासिक जानकारी को समझने के कुछ तरीकों को देखने के बाद, अब हम हमारे अंतिम विषय की ओर ध्यान लगा सकते हैं : संश्लेषित धर्मवैज्ञानिक संरचनाएँ। हमारे अध्याय के इस भाग में हम इस बात पर ध्यान केंद्रित करेंगे कि पुराने नियम के इतिहास की विभिन्न अवधियों में परमेश्वर के प्रकाशन ने कैसे संश्लेषित, तार्किक रूप से स्पष्ट धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं की रचना की।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

संश्लेषित संरचनाएँ

जब हम संश्लेषित धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं की बात करते हैं, तो हमारा अर्थ होता है कि ईश्वरीय प्रकाशन एक साथ उपयुक्त बैठते हैं, ताकि वे धर्मवैज्ञानिक विषयों पर स्पष्ट तार्किक दृष्टिकोणों की रचना कर सकें। अब, इसका अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य परमेश्वर द्वारा प्रकट सब बातों के बीच के तार्किक संबंध को हमेशा व्यापक रूप से समझ लेते हैं। इसकी अपेक्षा अर्थ यह है कि परमेश्वर के प्रकाशन एक दूसरे से अलग-अलग नहीं थे, और न ही वे तार्किक रूप से एक दूसरे से असंगत थे। सही तरीके से देखने पर वे विश्वास या धारणा की तार्किक पद्धतियों या जिन्हें हम संश्लेषित, धर्मवैज्ञानिक संरचनाएँ कहते हैं, की रचना करते हैं।

हम इस विषय को दो मुख्य तरीकों से देखेंगे। पहला, हम उन विविध स्रोतों को देखेंगे जिनसे हमें पुराने नियम की इन संश्लेषित, धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को समझने के लिए निर्भर रहना चाहिए। और दूसरा, हम देखेंगे कि ये धर्मवैज्ञानिक संरचनाएँ विविध स्तरों पर प्रकट होती हैं। आइए सबसे पहले उन विभिन्न स्रोतों पर विचार करें जिन्हें हमें ध्यान में रखना चाहिए।

विविध स्रोत

जब हम उन विविध स्रोतों की खोज करते हैं जिनसे हम धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को समझते हैं, तो हम पहले बाइबल के प्रकाशनों पर ध्यान देंगे, और दूसरा हम बाइबल से बाहर के प्रकाशनों को देखेंगे। जब कभी हम पवित्रशास्त्र के किसी भाग की व्याख्या करते हैं, तो हमें प्रत्येक उपलब्ध स्रोत का प्रयोग करने के लिए तैयार रहना चाहिए। परंतु स्रोतों की इन दो मूलभूत श्रेणियों के आधार पर सोचना सहायक होता है। आइए पहले बाइबल के उन प्रकाशनों की ओर मुड़ें जो हमें धर्मवैज्ञानिक संरचनाएँ दिखाते हैं।

बाइबल के प्रकाशन

जब हम पुराने नियम के इतिहास की किसी अवधि में धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को समझने का प्रयास करते हैं तो पवित्रशास्त्र मुख्य ध्यान का विषय होता है। परंतु एक प्रश्न जो अक्सर उठ खड़ा होता है, वह यह है : “पवित्रशास्त्र के किन भागों को हमें देखना चाहिए?”

विचार-विमर्श के लिए, हम इस प्रश्न को बाइबल के तीन प्रकार के अनुच्छेदों में विभाजित करेंगे जब वे समय की विचाराधीन अवधि से संबंधित होते हैं : पहला, समकालिक अनुच्छेद - पवित्रशास्त्र के ऐसे भाग जो विचाराधीन ऐतिहासिक अवधि के साथ व्यवहार करते हैं; दूसरा पूर्वगामी अनुच्छेद - बाइबल के ऐसे भाग जो विचाराधीन अवधि से पहले के इतिहास के साथ व्यवहार करते हैं; और तीसरा उत्तरगामी अनुच्छेद - पवित्रशास्त्र के ऐसे भाग जो समय की बाद की अवधियों से प्रकाशन के साथ व्यवहार करते हैं। पहले यह ध्यान दें कि बाइबल के समकालिक अनुच्छेद धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को समझने में हमारी सहायता कैसे करते हैं।

जब हम इस संदर्भ में समकालिक अनुच्छेदों की बात करते हैं, तो हमारा अर्थ उन अनुच्छेदों से नहीं है जो एक ही समय में *लिखे* गए थे, बल्कि ऐसे अनुच्छेदों से है जो *समय की उसी* अवधि का *वर्णन करते* हैं। कभी-कभी किसी अवधि के धर्मविज्ञान के बारे में जानकारी पवित्रशास्त्र के केवल एक ही अनुच्छेद में पाई जाती है। परंतु अधिकांशतः पुराने नियम के इतिहास की अवधियों का वर्णन एक से अधिक स्थानों में होता है। जब ऐसा होता है, तो हमें उस समस्त जानकारी को एक साथ जोड़ लेना चाहिए जो पवित्रशास्त्र प्रदान करता है।

क्योंकि हम विश्वास करते हैं कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर के द्वारा प्रेरित है, इसलिए हम इसके सभी भागों के सामंजस्यता में होने की पुष्टि करते हैं। हम मानते हैं कि किसी भी अवधि के इतिहास और धर्मविज्ञान पर की गई बाइबल की प्रत्येक टिप्पणी सच्ची है और यह उन सब बातों के साथ उपयुक्त बैठती है जिन्हें हम उस अवधि के विषय में जानते हैं। बाइबल के लेखक कभी एक दूसरे की काट नहीं करते; बल्कि, वे सामंजस्यता के साथ एक दूसरे के पूरक होते हैं। इसलिए हमें स्वयं को एक ही अनुच्छेद तक सीमित नहीं रखना चाहिए; हमें यह निर्धारित करने के लिए बाइबल के विभिन्न समकालिक भागों पर निर्भर होने के लिए तैयार रहना चाहिए कि परमेश्वर ने विशेष ऐतिहासिक अवधियों में क्या किया और कहा है।

समकालिक अनुच्छेदों के अतिरिक्त, ऐसे बहुत से समय हैं जब हमें बाइबल के पूर्वगामी भागों पर भी निर्भर रहना चाहिए। यहाँ हम बाइबल के उन भागों के बारे में नहीं सोच रहे हैं जिन्हें दूसरे भागों से पहले लिखा गया था, बल्कि ऐसे अनुच्छेदों के विषय में सोच रहे हैं जो पुराने नियम के इतिहास की आरंभिक अवधियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। आरंभिक समयों में परमेश्वर ने जो किया और कहा वह अक्सर कालांतर के समयों की धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं पर प्रकाश डालता है।

उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 12:1-3 में परमेश्वर ने अब्राहम को असंख्य संतानों और प्रतिज्ञा की भूमि का उत्तराधिकार देने की प्रतिज्ञा की। परमेश्वर के ये शब्द अब्राहम के जीवन के लिए समर्पित उत्पत्ति के अध्यायों में बार बार प्रकट होते हैं, और वे उसके जीवनकाल की धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं। फिर भी, अब्राहम के जीवन में उनके महत्व का कोई स्पष्ट विवरण नहीं मिलता है। इस विषय का उत्तर बाइबल के उन अनुच्छेदों द्वारा सर्वोत्तम रीति से दिया जा सकता है जो पूर्वगामी या आरंभिक समयों को दर्शाते हैं।

उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 1:28 में परमेश्वर ने अपने स्वरूपों, अर्थात् आदम और हव्वा को आज्ञा दी कि वे फलें-फूलें और पूरी पृथ्वी पर अधिकार करें। पृथ्वी पर परमेश्वर के स्वरूप का संख्यात्मक और भौगोलिक विस्तार मनुष्यजाति के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों हेतु सदैव आवश्यक रहा है। कालांतर में, जब मूसा ने अब्राहम के विषय में लिखा, तो उसने इसी आरंभिक धर्मवैज्ञानिक संरचना पर और अधिक निर्माण किया। सरल शब्दों में कहें तो, परमेश्वर ने अब्राहम के वंशजों और भूमि पर ध्यान केंद्रित किया क्योंकि उसने अब्राहम और उसके वंशजों को आदम को दिए गए मूल आदेश को आगे बढ़ाने के लिए चुना था। अब्राहम के वंशजों की संख्यात्मक वृद्धि और उनके द्वारा प्रतिज्ञा की भूमि को अपने अधिकार में लेना पूरे संसार पर मनुष्य के संपूर्ण अधिकार का आरंभिक बिंदु होगा।

बार-बार हम पाते हैं कि पुराने नियम के अभिलेख कई धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को स्पष्ट नहीं करते क्योंकि वे उस पर निर्भर रहते हैं जो परमेश्वर ने समय की आरंभिक अवधियों में पहले से ही प्रकट कर दिया था। इसी कारण, जब हम इतिहास के किसी एक विशेष भाग की धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं का अध्ययन करते हैं तो हमें सदैव स्वयं को पूर्वगामी प्रकाशनों के प्रति जागरूक रखना चाहिए।

पवित्रशास्त्र के समकालिक और पूर्वगामी अनुच्छेदों के अतिरिक्त उत्तरगामी या कालांतर के अनुच्छेद भी धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को समझने में हमारी सहायता करते हैं। जैसा कि अन्य प्रकार के अनुच्छेदों के साथ है, यह आवश्यक नहीं है कि उत्तरगामी अनुच्छेद वे ही हों जिन्हें कालांतर में लिखा गया हो। बल्कि, वे पवित्रशास्त्र के ऐसे भाग हैं जो इतिहास की उत्तरगामी अवधियों को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 12:3 में परमेश्वर द्वारा अब्राहम से कहे शब्दों को सुनिए :

जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे। (उत्पत्ति 12:3)

इस पद के दूसरे आधे हिस्से में, अब्राहम को स्पष्ट रूप से ऐसा माध्यम होने के लिए बुलाया गया था जिसके द्वारा परमेश्वर पूरे संसार को आशीष देगा। परंतु बहुत से लोग इस पद के पहले हिस्से को समझने में उलझ जाते हैं। परमेश्वर का तब क्या अर्थ था, जब उसने कहा कि यह विश्वव्यापी आशीष उस द्विरुपी प्रक्रिया के माध्यम से आएगी जिसमें परमेश्वर उन्हें आशीष देगा जो अब्राहम को आशीर्वाद देंगे, और उन्हें शाप देगा जो उसे कोसेंगे? इसे समझने का एक तरीका बाइबल के उत्तरगामी प्रकाशन को देखना है। उदाहरण के लिए, भजन 72:17 के शब्दों को सुनिए :

उसका नाम सदा सर्वदा बना रहेगा; जब तक सूर्य बना रहेगा, तब तक उसका नाम नित्य नया होता रहेगा, और लोग अपने को उसके कारण धन्य गिनेंगे, सारी जातियाँ उसको धन्य कहेंगी। (भजन संहिता 72:17)

भजन 72 सुलैमान के दिनों में लिखा गया था, जो अब्राहम के समय से लगभग एक हजार वर्ष बाद का समय था। और जब वह ऐसे व्यक्ति के बारे में बात करता है जिसका नाम "सदा सर्वदा" बना रहेगा, तो यह दाऊद के महान पुत्र, अर्थात् मसीहा को दर्शाता है, जो विजय प्राप्त करेगा, शासन करेगा, और सभी राष्ट्रों के भण्डारों को प्राप्त करेगा। यह पद उत्पत्ति 12 का उत्तरगामी प्रकाशन है क्योंकि यह उन राजकीय विषयों को दर्शाता है जो सुलैमान की बाद की ऐतिहासिक अवधि के विषय में सच्चे थे। परंतु यह हमें अब्राहम के समय की धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं के बारे में भी कुछ बताता है। विशेष रूप से, यह परमेश्वर द्वारा अब्राहम को दी गई पहले की प्रतिज्ञा को दर्शाता है जब यह कहता है कि, "लोग अपने को उसके कारण धन्य गिनेंगे, सारी जातियाँ उसको धन्य कहेंगी।" परंतु यह हमें उस तरीके के बारे में क्या बताता है जिसमें अब्राहम को दी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञा पूरी होगी?

भजन 72 के आस पास के पद संकेत देते हैं कि अब्राहम की आशीषें युद्ध के द्वारा पूरे संसार में फैलेंगी। जब मसीहा दुष्ट राष्ट्रों को हरा देगा और राष्ट्रों में पाए जाने वाले धर्मियों को बचाएगा, तो जो अब्राहम के राजकीय वंशज के साथ खड़े होंगे, वे आशीष पाएँगे, और जो उसका विरोध करेंगे वे श्रापित होंगे। और अंततः पृथ्वी के सारे घराने इस प्रक्रिया के द्वारा आशीष पाएँगे।

यह विचार इस तथ्य के द्वारा अभिपुष्ट हो जाता है कि अब्राहम के बारे में बहुत सी कहानियाँ लोगों के अन्य समूहों के साथ इस पूर्वज के सकारात्मक और नकारात्मक संबंधों का उल्लेख करती हैं। परमेश्वर ने अब्राहम के समक्ष प्रकट किया कि सभी जातियों के लिए उसकी आशीष संघर्ष की एक प्रक्रिया के द्वारा आएगी जिसमें परमेश्वर कुछ को आशीष देगा और अन्यों को नाश कर देगा।

जैसा कि यह उदाहरण दर्शाता है, आरंभिक धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं का उल्लेख तब तक अक्सर नहीं किया गया या उन्हें अस्पष्ट रूप से छोड़ दिया गया जब तक कालांतर के प्रकाशन ने उन्हें स्पष्ट नहीं कर दिया। इन विषयों में, बाइबल के उत्तरगामी प्रकाशन आरंभिक अवधियों की धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को समझने में हमारी सहायता कर सकते हैं। और इस तरह से हम देख सकते हैं कि हमें पुराने नियम की किसी विशेष अवधि की धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए बाइबल के प्रकाशन के सभी तरह के समय-आधारित प्रकारों से सीखने के लिए तैयार रहना चाहिए।

अब हमें उस दूसरे मुख्य स्रोत की ओर मुड़ना चाहिए जो हमें उन धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को देखने में सक्षम बनाता है जिन्होंने पुराने नियम की अवधियों के चरित्रों का वर्णन किया है : बाइबल से बाहर का प्रकाशन, अर्थात् परमेश्वर का वह प्रकाशन जो पवित्रशास्त्र के बाहर मिलता है।

बाइबल से बाहर के स्रोत

जब हम पुराने नियम की एक अवधि की धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को समझने का प्रयास करते हैं, तो यह स्मरण रखना महत्वपूर्ण है कि बाइबल का कोई भी अनुच्छेद किसी धर्मवैज्ञानिक शून्यता में नहीं लिखा गया था। पुराने नियम के लेखकों ने अपने लेखनों को उन धारणाओं और धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं के संदर्भ में लिखा जिन्हें उन्होंने अपने चरित्रों और साथ ही अपने पाठकों के साथ साझा किया। परमेश्वर ने इन धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को बाइबल से बाहर के दो प्रकार के प्रकाशनों के द्वारा प्रकट किया है। पहला, उसने उन्हें सामान्य प्रकाशन, अर्थात् सब बातों में परमेश्वर के प्रकाशन के द्वारा प्रकट किया; और दूसरा, उसने उन्हें उन विशेष प्रकाशनों के द्वारा दिया जो पवित्रशास्त्र में नहीं पाए जाते।

पुराना और नया नियम दोनों इस बात की शिक्षा आरंभ से ही देते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति ने सामान्य प्रकाशन के द्वारा कम से कम कुछ सच्चे धर्मविज्ञान को सीखा है। भजन 19 और रोमियों 1:18-21 जैसे अनुच्छेद दर्शाते हैं कि परमेश्वर ने अपनी संपूर्ण सृष्टि के माध्यम से सब लोगों पर अपने स्वभाव, नैतिक मांगों और पाप के परिणाम को प्रकट किया है। हम इस विषय को इस तरह से सारगर्भित कर सकते हैं : इस तथ्य के बावजूद भी कि पापमय लोग अक्सर उन बातों को दबा देते हैं जिन्हें वे सामान्य प्रकाशन से जानते हैं, फिर भी किसी न किसी स्तर पर वे अब भी सच्चे धर्मविज्ञान को इतना तो जानते हैं कि वह उन्हें परमेश्वर के विशेष प्रकाशनों को समझने के लिए जिम्मेदार बना दे।

सामान्य प्रकाशन की वास्तविकता के कारण, पुराने नियम के लेखकों ने सदैव यह माना है कि उनकी कहानियों के ऐतिहासिक चरित्रों और उनकी कहानियों के बाद के पाठकों, सभी ने लेखकों के रूप में उनके साथ अनेक सच्चे धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को साझा किया है। उन्होंने कुछ बातों को प्रत्यक्ष रूप से स्पष्ट करने की आवश्यकता को महसूस नहीं किया क्योंकि बहुत सी मूलभूत धर्मवैज्ञानिक संरचनाएँ पहले से ही विद्यमान थीं। केवल एक अनुच्छेद पर ध्यान दें जिसका अक्सर आधुनिक धर्मविज्ञानियों द्वारा गलत अर्थ निकला जाता है क्योंकि वे सामान्य प्रकाशन के बारे में भूल जाते हैं।

उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 22:12 में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने अब्राहम को इन वचनों के साथ उसके पुत्र को बलिदान चढ़ाने से रोका :

> **उस ने कहा, "उस लड़के पर हाथ मत बढ़ा, और न उससे कुछ कर; क्योंकि तू ने जो मुझ से अपने पुत्र, वरन् अपने एकलौते पुत्र को भी, नहीं रख छोड़ा; इस से मैं अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है।" (उत्पत्ति 22:12)**

दुर्भाग्य से, समकालीन धर्मविज्ञानियों द्वारा इस अनुच्छेद का अक्सर गलत अर्थ निकाला जाता है। क्योंकि स्वर्गदूत ने कहा, "मैं अब जान गया हूँ कि तू परमेश्वर का भय मानता है," इसलिए कई व्याख्याकारों ने यह सुझाव दिया है कि अब्राहम का मानना यह था कि इस कहानी के इस क्षण से पहले परमेश्वर नहीं जानता था कि

वह क्या करेगा। दूसरे शब्दों में, वे यह मानते हैं कि इस अवधि के दौरान धर्मविज्ञान में परमेश्वर के सर्वज्ञानी होने की मान्यता सम्मिलित नहीं थी।

परंतु सामान्य प्रकाशन के संबंध में बाइबल की गवाही इसके बिलकुल विपरीत दर्शाती है। रोमियों 1:20 में पौलुस ने कहा कि सब लोग परमेश्वर की "अदृश्य विशेषताओं" को जानते हैं, जैसे कि उसके सर्वज्ञानी होने को। अब निस्संदेह, पापमय लोग इस ज्ञान को दबा देते हैं, और परमेश्वर द्वारा अब्राहम से कहे वचनों का गलत अर्थ निकाल लेते हैं। परंतु सामान्य प्रकाशन स्पष्ट कर देता है कि अब्राहम के जीवन के इस समय का मूसा का उल्लेख यह सुझाव नहीं देता कि परमेश्वर अपने ज्ञान में सीमित था।

समय समय पर, सामान्य प्रकाशन की संभावना बाइबल के लेखकों द्वारा व्यक्त की जाती है। जब अन्यजातियों ने योना और दानिय्येल जैसे इस्राएल के भविष्द्वक्ताओं से संदेशों को प्राप्त किया, तो उन्होंने अपने धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को इन भविष्यद्वक्ताओं द्वारा प्रत्यक्ष रूप में कही गईं थोड़ी सी बातों पर ही नहीं बनाया। परमेश्वर के संदेशवाहकों ने अन्यजातियों के इन लोगों से बड़ी दृढ़ता के साथ बात की कि उन्होंने सामान्य प्रकाशन के द्वारा स्वर्ग और पृथ्वी के परमेश्वर के बारे में बहुत कुछ समझ लिया था। जब हम उन धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को समझने का प्रयास करते हैं जिन्होंने पुराने नियम के इतिहास की अवधि को चित्रित किया, तो हमें सदैव स्मरण रखना चाहिए कि ऐसा बहुत कुछ है जो बिना लिखे रह गया था क्योंकि बाइबल के लेखकों ने उसे सामान्य प्रकाशन माना था।

सामान्य प्रकाशन के अतिरिक्त, बाइबल से बाहर का एक और स्रोत है जो हमें पुराने नियम की एक अवधि की धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को समझने में सहायता करता है : बाइबल से बाहर का *विशेष* प्रकाशन।

पुराना नियम दर्शाता है कि परमेश्वर ने कुछ खास लोगों को स्वप्नों, दर्शनों, बातों को सुनने, और इन जैसी अन्य बातों के द्वारा विशेष प्रकाशन प्रदान किया। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि पवित्रशास्त्र में कई पवित्र लोगों ने काफी विशेष प्रकाशन प्राप्त किया जिसके लिए कोई विशेष बाइबल आधारित प्रमाण नहीं है। विशेष प्रकाशन इस्राएल से बाहर के कुछ लोगों को भी दिए गए थे, जैसे मलिकिसिदक और यहाँ तक यूसुफ के समय में फिरौन को। कई बार, पुराना नियम इशारा करता है कि बाइबल से बाहर के ये प्रकाशन घटित हुए थे, और यह भी कि प्राचीन लोग इनके बारे में अच्छी तरह से जानते थे। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 7:2 में नूह से कहे गए परमेश्वर के वचनों को सुनिए :

> **सब जाति के शुद्ध पशुओं में से तो तू सात-सात जोड़े, अर्थात् नर और मादा लेना; पर जो पशु शुद्ध नहीं है, उनमें से दो दो लेना, अर्थात् नर और मादा। (उत्पत्ति 7:2)**

इस अनुच्छेद में, परमेश्वर ने नूह को शुद्ध और अशुद्ध पशुओं के बीच भेद करने को कहा जब वह उन्हें जहाज में ले जा रहा था। परंतु पवित्रशास्त्र में कहीं पर भी यह उल्लेख नहीं है कि परमेश्वर नूह को यह बता रहा हो कि कौन सा पशु शुद्ध था और कौन सा अशुद्ध। सबसे अच्छा निष्कर्ष यह है कि परमेश्वर ने विशेष रूप से नूह या उससे पहले के किसी अन्य व्यक्ति के समक्ष शुद्ध और अशुद्ध पशुओं में पाई जाने वाली भिन्नता को प्रकट कर दिया था।

जब हम उन धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं की खोज करते हैं जिन्होंने पुराने नियम के इतिहास की एक अवधि को चित्रित किया, तो हमें उन संकेतों के बारे में भी जागरूक रहने की आवश्यकता है जिनमें परमेश्वर ने शायद अन्य विशेष प्रकाशन दिए हों जिनका हमारे पास कोई उल्लेख नहीं है। जब हम इस तरह के बाइबल से

बाहर के प्रकाशनों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम विचाराधीन ऐतिहासिक अवधि की स्पष्ट, संश्लेषित संरचनाओं को पूरी तरह से समझने में समर्थ हो जाते हैं।

बहुत से स्रोतों में से कुछ ऐसे स्रोतों को देख लेने के बाद जो पुराने नियम की किसी अवधि की धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को समझने में हमारी सहायता करती हैं, अब हमें धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं के उन विभिन्न स्तरों की ओर मुड़ना चाहिए जिनका हम सामना करते हैं।

विविध स्तर

जब हम इतिहास की विशेष अवधियों में पुराने नियम के धर्मविज्ञान की संश्लेषित, तार्किक व्यवस्थाओं को देखते हैं, तो यह शीघ्र ही स्पष्ट हो जाता है कि धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं के विभिन्न स्तर पाए जाते हैं। वे बहुत ही सरल संरचनाओं से लेकर बहुत ही विस्तृत संरचनाओं तक की एक विशाल श्रेणी को सम्मिलित करते हैं।

यह देखने के लिए कि ऐसा कैसे होता है, हम धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं के तीन सामान्य स्तरों को देखेंगे। पहला, हम "मूलभूत-स्तर" की संश्लेषित धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं पर ध्यान देंगे; दूसरा, हम "मध्य-स्तर" की संश्लेषित धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं के एक उदाहरण को देखेंगे। और तीसरा हम अपेक्षाकृत "जटिल" संश्लेषित धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं की खोज करेंगे। आइए पहले हम अपने ध्यान को कुछ ऐसी तार्किक व्यवस्थाओं की ओर लगाएँ जिन्होंने पुराने नियम के इतिहास की अवधियों में प्रकट धर्मविज्ञान को चित्रित किया है।

मूलभूत-स्तरीय संरचनाएँ

परमेश्वर के विशेष कार्यों और वचनों के बीच तार्किक संबंधों और अर्थों में सबसे अधिक आधारभूत धर्मवैज्ञानिक संरचनाएँ प्रकट होती हैं। इससे हमारा क्या अर्थ है, यह देखने के लिए हम दो विषयों को देखेंगे। पहला, हम कुछ ऐसे तरीकों की खोज करेंगे जिनमें ईश्वरीय कार्य और प्रकाशन तार्किक रूप से परस्पर संबंधित होते हैं। और दूसरा, जो कुछ हमारे मन में हैं हम उसे एक विशेष अनुच्छेद के द्वारा स्पष्ट करेंगे। आइए पहले हम उन परस्पर तार्किक संबंधों के बारे सोचें जो ईश्वरीय कार्यों और वचनों में पाए जाते हैं।

ऐसे कई तरीकें हैं जिनमें परमेश्वर के विशेष प्रकाशन एक दूसरे से संबंधित होते हैं। पहला, परमेश्वर के कार्य अक्सर उसके वचनों के साथ परस्पर संबंधित होते हैं। जैसा कि हमने अपने पिछले अध्याय में देखा, परमेश्वर के वचन अक्सर भविष्यद्वाणियों के रूप में उसके कार्यों से पहले प्रकट हुए। अन्य समयों पर, परमेश्वर के वचन लगभग उसके कार्यों के साथ-साथ प्रकट हुए और उन्होंने स्पष्ट किया कि वह क्या कर रहा था। और फिर किसी दूसरे समयों में, उसके वचन उसके कार्यों के बाद आए और उन्होंने परमेश्वर द्वारा अतीत में किए गए कार्यों के महत्व को दर्शाया।

इसके साथ-साथ, परमेश्वर के कार्यों ने उसके वचनों पर भी प्रकाश डाला। उदाहरण के लिए, जब परमेश्वर ने बोलने से पहले कार्य किया, तो उसके कार्यों ने प्रायः उसके आने वाले वचन को तैयार करने के द्वारा उसका अनुमान लगाया कि वह क्या कहेगा। जब परमेश्वर ने लगभग अपने वचनों के साथ-साथ कार्य किया, तो उसके कार्यों ने अक्सर उसके विवरणात्मक वचनों को प्रज्वलित किया। और निस्संदेह, जब परमेश्वर ने बोलने के बाद कार्य किया, तो उसने ऐसा अक्सर अपने पहले के वचनों को पूर्ण करने के लिए किया।

परंतु इसके अतिरिक्त, आधारभूत धर्मवैज्ञानिक संरचनाएँ ऐसे तरीकों में भी प्रकट होती हैं जिनमें परमेश्वर के कार्य तार्किक रूप से उसके कार्यों के साथ परस्पर संबंधित होते हैं। इन विषयों में, तार्किक स्पष्टता कई रूपों में नजर आती है। कुछ संभावनाएँ ये हो सकती हैं : कई बार परमेश्वर का एक कार्य किसी अन्य कार्य के साथ केवल जोड़ दिया गया या संयोजित कर दिया गया था; अन्य समयों में, एक कार्य जिसे परमेश्वर ने किया उसने परमेश्वर द्वारा किए गए किसी दूसरे कार्य को पहले से प्रकट किया; परमेश्वर के कार्यों ने अतिरिक्त कार्यों के लिए मंच को तैयार किया; और कई बार ईश्वरीय कार्य अन्य कार्यों के प्रकट होने का कारण बने।

और इससे परे, आधारभूत धर्मवैज्ञानिक संरचनाएँ भी प्रकट होती हैं जब हम देखते हैं कि कैसे परमेश्वर के वचन प्रकाशन तार्किक रूप से अन्य वचन प्रकाशनों के साथ परस्पर संबंधित होते हैं। एक बार फिर से, संभावित संबंध असंख्य हैं। यदि कुछ का नाम लें तो, एक वचन शायद दूसरे से जुड़ा हुआ हो सकता है, एक वचन शायद किसी दूसरे का तार्किक आधार हो सकता है, या एक वचन ने शायद दूसरे को स्पष्ट किया हो।

वे भिन्न तरीके जिनमें परमेश्वर के कार्य और वचन एक दूसरे से संबंधित होते हैं, वे बहुत सी अन्य तार्किक व्यवस्थाओं को स्थापित करते हैं। परमेश्वर के विशेष कार्यों और वचनों के परस्पर संबंधों ने तार्किक आशयों के असंख्य, जटिल जालों की रचना की है। इन आशयों ने ऐसी संश्लेषित धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं या ऐसे स्पष्ट धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों की रचना की जिन्हें परमेश्वर ने पुराने नियम के इतिहास के विशेष समयों पर स्थापित किया।

इस सामान्य विचार को मन में रखते हुए, यह स्पष्ट करना सहायक होगा कि कैसे ईश्वरीय कार्यों और वचनों के परस्पर संबंध एक विशेष अनुच्छेद में स्पष्ट धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं की रचना करते हैं। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 2:15-22 में हव्वा की रचना की कहानी के एक भाग पर ध्यान दें। वहाँ हम इन जाने पहचाने वचनों को पढ़ते हैं।

> **तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उस में काम करे और उसकी रक्षा करे . . . फिर यहोवा परमेश्वर ने कहा, "आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मै उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उस से मेल खाए।" और यहोवा परमेश्वर भूमि में से सब जाति के बनैले पशुओं, और आकाश के सब भाँति के पक्षियों को रचकर आदम के पास ले आया कि देखे, कि वह उनका क्या क्या नाम रखता है; और जिस जिस जीवित प्राणी का जो जो नाम आदम ने रखा वही उसका नाम हो गया . . . परंतु आदम के लिये कोई ऐसा सहायक न मिला जो उस से मेल खा सके। तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को भारी नींद में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक पसली निकालकर उसकी जगह मांस भर दिया। और यहोवा परमेश्वर ने उस पसली को जो उस ने आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया; और उसको आदम के पास ले आया। (उत्पत्ति 215-22)**

सबसे पहले परमेश्वर के कार्यों और वचनों के बीच के कुछ तार्किक परस्पर संबंधों पर ध्यान दें। यह अनुच्छेद पद 15 से आरंभ होता है जहाँ परमेश्वर मनुष्य को वाटिका की देखरेख करने के लिए उसमें रखता है। यह कार्य पद 18 के पहले आधे हिस्से में परमेश्वर के वचन के साथ परस्पर संबंधित हुआ जब परमेश्वर ने कहा था, "आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं है।" पहली दृष्टि में, हमने सोचा होगा कि अदन की वाटिका में आदम का जीवन भव्य था, परंतु परमेश्वर के वचन ने उसके पिछले कार्य को दर्शाया और ध्यान दिया कि आदम का अलग-थलग अस्तित्व अच्छा नहीं था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

इसी तरह से, हम यह भी देखते हैं कि पद 18 के दूसरे आधे हिस्से के शब्दों, "मैं उसके लिए एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उससे मेल खाए," ने पद 22 में स्त्री की रचना में परमेश्वर के कार्य की पूर्णता की भविष्यद्वाणी की। परमेश्वर के वचनों और कार्यों के बीच के ये तार्किक संबंध एक सरल धर्मवैज्ञानिक संरचना, अर्थात् धारणाओं के एक स्पष्ट समूह को प्रकट करते हैं जो इतिहास की इस अवधि से विकसित हुई हैं। परमेश्वर ने मनुष्यों की रचना की कि वे उसकी वाटिका की देखरेख करें, परंतु इस कार्य में पुरूषों और स्त्रियों दोनों की आवश्यकता थी।

इस कहानी में परमेश्वर के विभिन्न कार्य ऐसे रूपों में एक दूसरे के साथ परस्पर संबंधित कि उन्होंने संश्लेषित धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को प्रकट किया। परमेश्वर ने पहले से ही इस तैयारी में जानवरों की रचना कर दी थी कि आदम पद 19 में उनका नाम रखने के द्वारा अधिकार को क्रियान्वित करे। पद 20 हमें बताता है कि आदम को जानवरों में कोई सहायक नहीं मिला और इसने जानवरों के साथ आदम के परस्पर संबंध को आंशिक रूप से स्पष्ट किया। परमेश्वर के इन कार्यों ने एक सरल धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण, अर्थात् इन बातों को देखने के एक तार्किक तरीके को प्रकट किया। परमेश्वर ने मनुष्यों को जानवरों पर शासन करने के लिए स्थापित किया, न कि उनमें से अपना एक उपयुक्त सहायक प्राप्त करने के लिए।

अंततः हम पद 18 में दो प्रकाशन-संबंधी शब्दों के बीच एक तार्किक परस्पर संबंध को भी देख सकते हैं। एक ओर, परमेश्वर ने कहा, "आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं है।" यह कथन ही परमेश्वर द्वारा यह कहे जाने का कारण है, "मैं उसके लिए ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उससे मेल खाए।" यह तार्किक संबंध स्पष्ट धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रकट करता है कि मनुष्य के अस्वीकार्य एकांत अस्तित्व के प्रति परमेश्वर का समाधान उपयुक्त सहायक की रचना करना था। यह सरल उदाहरण उस बात को स्पष्ट करता है जिसका सामना हम पुराने नियम में बार बार करते हैं। संश्लेषित धर्मवैज्ञानिक संरचनाएँ, स्पष्ट धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण ईश्वरीय कार्यों और वचनों के परस्पर संबंधों के द्वारा प्रकट होते हैं।

अब हमें उन मध्य-स्तरीय धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं की ओर मुड़ना चाहिए जिन्होंने पुराने नियम के इतिहास की अवधियों के चरित्र को चित्रित किया।

मध्य-स्तरीय संरचनाएँ

परमेश्वर के विशेष कार्यों और वचनों का महत्व अक्सर तब और अधिक स्पष्ट हो जाता है जब हम उन संश्लेषित धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं पर ध्यान लगाते हैं जो एक मध्य स्तर की औसत दर्जे की जटिल होती हैं। जैसा कि हमने अभी अभी देखा, परमेश्वर के अकेले कार्य और वचन एक दूसरे से दूर एकांत में घटित नहीं हुए। और यही उसके कार्यों और वचनों के सामूहिक रूप पर भी लागू होता था। वे ऐसी अधिक जटिल धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं में उपयुक्त बैठते हैं, जिन्होंने इतिहास की विचाराधीन अवधि को चित्रित किया।

कई तरह की मध्य-स्तरीय संश्लेषित संरचनाएँ पाई जाती हैं, परंतु हमारे उद्देश्यों लिए हम केवल एक पर ध्यान देंगे : ईश्वरीय वाचाएँ। पहला, हम वाचाओं की तार्किक गतिकी को आरेखित करेंगे, और तब हम यह दर्शाएँगे कि यह तार्किक संरचना इतिहास की एक अवधि के धर्मविज्ञान को समझने में कैसे हमारी सहायता करती है। आइए पहले वाचाओं की तार्किक गतिकी पर ध्यान दें।

यह बहुत पहले से ही पहचान लिया गया था कि पुराने नियम के इस्राएल का विश्वास वाचा आधारित था। वाचा की अवधारणा पवित्रशास्त्र में व्यापक स्तर पर पाई जाती है। यद्यपि बहुत सी ऐसी बातें हैं जिन्हें हम

वाचाओं के बारे में कह सकते हैं, परंतु हम पुराने नियम की ईश्वरीय वाचाओं के केवल एक ही पहलू को देखेंगे : ये विशेष ईश्वरीय प्रकाशनों की स्पष्टता को समझने में कैसे हमारी सहायता करती हैं।

यद्यपि पुराने नियम की प्रत्येक वाचा की अपनी ही विशेषताएँ थीं, फिर भी उन सबने इन तीन मुख्य तत्वों को समझने के एक तार्किक रूप को प्रदर्शित किया : ईश्वरीय परोपकारिता, मानवीय विश्वासयोग्यता और आज्ञाकारिता के लिए आशीषों और अवज्ञाकारिता के लिए श्रापों के परिणाम। परमेश्वर और मनुष्य के बीच के संबंध के सदैव इन तीन तत्वों के तार्किक संबंधों द्वारा संचालित हुए। परमेश्वर ने इन रूपों में परोपकारिता को प्रकट किया कि उसने लोगों का अपने साथ संबंध स्थापित किया और उन्हें उस संबंध में बनाए रखा। परंतु इसके प्रत्युत्तर में, मनुष्य से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे उसके आदेशों का पालन करने के द्वारा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता दिखाएँ। इसके अतिरिक्त, पुराने नियम की प्रत्येक वाचा ने परिणामों को स्थापित किया : आशीषें, ये उन लोगों को प्राप्त होंगी जो परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारी थे, और श्राप, ये उन लोगों पर पड़ेंगे जो अवज्ञाकारी थे।

यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि पुराने नियम के इतिहास के प्रत्येक पल का संचालन इन तार्किक संरचनाओं के द्वारा किया जाता था। उन्होंने एक नमूने की रचना की जो परमेश्वर के सभी कार्य और वचन प्रकाशनों के अंतर्निहित संगठन को देखने में हमारी सहायता करता है। कई बार, परमेश्वर के प्रकाशन ने उसकी वाचाई परोपकारिता, अर्थात् लोगों के प्रति उसकी दया को प्रकट किया। अन्य ईश्वरीय कार्यों और वचनों ने मानवीय विश्वासयोग्यता, अर्थात् उसकी परोपकारिता के प्रति मनुष्यों के प्रत्युत्तर के लिए परमेश्वर की अपेक्षा को व्यक्त किया। और ईश्वरीय प्रकाशनों ने अक्सर आशीषों और श्रापों के परिणामों की ओर भी ध्यान आकर्षित किया। पुराने नियम के किसी भी समय के धर्मविज्ञान की संरचना के प्रति हमारी जागरूकता एक विस्तृत रूप में उन तरीकों पर निर्भर करती है जिनमें ईश्वरीय प्रकाशन की प्रत्येक विशेषता इन वाचाई संरचनाओं में उपयुक्त बैठती हैं।

यह दर्शाने के लिए कि मध्य-स्तरीय संश्लेषित संरचना कैसे कार्य करती है, आइए उत्पत्ति 2 में हव्वा की सृष्टि के उदाहरण को देखें। अब, जैसा कि हम जानते हैं, उत्पत्ति 2 की घटनाएँ आदम के साथ परमेश्वर की आरंभिक वाचा के दौरान हुई थीं। हम इस वाचा की अद्वितीयता पर अपने अगले अध्याय में चर्चा करेंगे। फिर भी, इस समय हम केवल ऐसे कुछ स्पष्ट तरीकों पर ध्यान देना चाहते हैं जिनमें ईश्वरीय परोपकारिता, मानवीय विश्वासयोग्यता और आशीषों तथा श्रापों के परिणामों की तार्किक संरचनाएँ इस अनुच्छेद में प्रकट होती हैं।

पहला, परमेश्वर ने तब आदम के प्रति अद्भुत परोपकारिता को प्रकट किया जब उसने उत्पत्ति 2:8 में सबसे पहले आदम को अपनी वाटिका में रखा था। परंतु यह भी ध्यान दें कि परमेश्वर ने आदम को विश्वासयोग्यता की जिम्मेदारी दी थी। आदम को वाटिका में इसलिए रखा कि वह वहाँ “काम करे और उसकी रक्षा कर।” इस पद की पृष्ठभूमि में पाई जाने वाली वाचाई संरचनाएँ स्पष्ट हैं। परमेश्वर आदम के प्रति दयालु था, और इसके प्रत्युत्तर में आदम को परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य सेवा में वाटिका में काम करना था और उसकी रक्षा करनी थी।

दूसरा, पद 18 में परमेश्वर ने आदम के प्रति और अधिक परोपकारिता दिखाई जब उसने आदम की अवस्था को देखा और कहा कि वह आदम को एक उपयुक्त सहायक देगा। तब 19 और 20 पदों में आदम ने जानवरों के नाम रखते हुए विश्वासयोग्यता के अपने उत्तरदायित्व को पूरा करना आरंभ किया, और उसने सही रूप से देखा कि कोई भी जानवर उसके लिए उपयुक्त नहीं था।

तीसरा, 21 और 22 पदों में हम जानवरों का नाम रखने और उनमें से कोई उपयुक्त सहायक न पाने के कार्य में आदम की विश्वासयोग्यता के परिणाम को देखते हैं : परमेश्वर ने आदम को हव्वा, अर्थात् उसके उपयुक्त सहायक के उपहार के साथ आशीषित किया। इस अनुच्छेद में ईश्वरीय श्रापों के परिणामों का कोई स्पष्ट खतरा नहीं है, परंतु यदि आदम अपने उत्तरदायित्व को पूरा करने में असफल हो जाता, तो हमारे पास यह मानने का हर वह कारण है कि परमेश्वर ने उसे इस प्रकार से आशीषित नहीं किया होता। ये सरल उदाहरण दर्शाता है कि वाचाओं जैसी मध्य-स्तरीय संश्लेषित संरचनाएँ कैसे परमेश्वर के विशेष कार्य और वचन प्रकाशनों को समझने में हमारी सहायता करती हैं।

संश्लेषित संरचनाओं के इन स्तरों को मन में रखते हुए, हमें जटिल-स्तरीय संश्लेषित संरचनाओं की ओर हमारे ध्यान को मोड़ना चाहिए।

जटिल-स्तरीय संरचनाएँ

जब हम जटिल-स्तरीय संश्लेषित संरचनाओं के बारे में बात करते हैं, तो हमारे मन में धर्मविज्ञान के ऐसे ढाँचे या पद्धतियाँ होती हैं जो इतनी दूरगामी होती हैं कि वे कई मूलभूत और मध्य-स्तरीय संरचनाओं को सम्मिलित करती हैं, और तब उन्हें अन्य विचारों के साथ भी जोड़ देती हैं। पुराने नियम के धर्मविज्ञान में अनेक जटिल धर्मवैज्ञानिक पद्धतियाँ हैं, परंतु हम हमारे ध्यान को एक सबसे प्रमुख पद्धति पर लगाएँगे : जिसे हम परमेश्वर के राज्य का धर्मविज्ञान कहेंगे।

इस विषय के बारे में हम बहुत कुछ कह सकते हैं, परंतु इस अध्याय में हमारे लिए केवल परमेश्वर के राज्य की धर्मशिक्षा को सारगर्भित करना, और फिर इसके एक ऐसे उदाहरण को देखना पर्याप्त होगा कि यह पुराने नियम के इतिहास के एक हिस्से की धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को देखने में कैसे हमारी सहायता करता है।

परमेश्वर के राज्य की धर्मशिक्षा अपनी सृष्टि के लिए परमेश्वर की व्यापक योजना को दर्शाता है। उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक, हम पाते हैं कि इतिहास इस लक्ष्य की ओर अपनिवर्तनीय रूप से बढ़ रहा है कि परमेश्वर को स्वर्ग के समान पृथ्वी पर अपने महिमामय राज्य को स्थापित करने के द्वारा सब प्राणियों से आदर और स्तुति मिले। संपूर्ण पवित्रशास्त्र यह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर ने अपने महिमामय राज्य के लिए पृथ्वी को तैयार करने के द्वारा अपने स्वरूप, अर्थात् मनुष्यों को इस लक्ष्य के लिए सेवा करने हेतु नियुक्त किया।

यद्यपि परमेश्वर ने अपने स्वरूप को मूल रूप से अदन की पवित्र वाटिका के भीतर ही रखा था, फिर भी मनुष्यों को सदैव से परमेश्वर की सेवा में फलने-फूलने और अधिकार रखने के द्वारा परमेश्वर की वाटिका को पृथ्वी के छोर तक बढ़ाने के लिए बुलाया गया है। जैसा कि हम उत्पत्ति 1:28 में पढ़ते हैं :

> **और परमेश्वर ने उनको आशीष दी, और उन से कहा, "फूलो- फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियों, और पृथ्वी पर रेंगनेवाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो। (उत्पत्ति 1:28)**

पाप में पतन के बाद मनुष्यों को इस कार्य को पूरा करने के लिए परमेश्वर द्वारा छुड़ाए जाने और सामर्थ्य प्राप्त करने की आवश्यकता थी। फिर भी, जिन्हें परमेश्वर ने पाप से छुड़ाया उन्हें अभी भी हर जगह उसके छुटकारे और शासन को फैलाने के द्वारा परमेश्वर के राज्य का विस्तार करने के लिए बुलाया गया था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें- http://thirdmill.org

दुखद रूप से, पवित्रशास्त्र बार-बार दर्शाता है कि परमेश्वर के लोग अपने मिशन में असफल हो गए, परंतु परमेश्वर ने अपनी राज्य की योजना के विषय में हार नहीं मानी। उसकी योजना तब अंततः पूरी हुई जब त्रिएकता का दूसरा व्यक्तित्व मनुष्य बन गया, जब उसने एक सिद्ध रूप से पवित्र जीवन जीया, क्रूस पर मरने के द्वारा परमेश्वर के लोगों के पापों का मूल्य अदा कर दिया, मृतकों में जी उठा, और तब अपने उचित प्रतिफल को प्राप्त किया जब वह स्वर्ग में चढ़ गया। वहाँ से, यीशु अब सबके ऊपर राज्य करता है, और वह सब वस्तुओं को नया बनाने के लिए महिमा में फिर से लौटेगा। जब मसीह वापस लौटेगा तो वह पृथ्वी से बुराई को पूरी तरह मिटा देगा और नए आकाश और नई पृथ्वी की रचना करेगा। और उस समय, पृथ्वी छुटकारा पाए हुए, परमेश्वर के पवित्र स्वरूपों से भर जाएगी और पिता परमेश्वर नीचे उतर आएगा और अपनी महिमा से पूरी पृथ्वी को भर देगा। जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य 21:9-23 में पढ़ते हैं :

> **फिर जिन सात स्वर्गदूतों के पास सात अन्तिम विपत्तियों से भरे हुए सात कटोरे थे, उनमें से एक मेरे पास आया, और मेरे साथ बातें करके कहा, "इधर आ, मैं तुझे दुल्हिन अर्थात् मेम्ने की पत्नी दिखाऊँगा।" तब वह मुझे आत्मा में एक बड़े और ऊँचे पहाड़ पर ले गया, और पवित्र नगर यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते दिखाया। परमेश्वर की महिमा उनमें थी . . . मैं ने उसमें कोई मन्दिर न देखा, क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेम्ना उसका मन्दिर है। उस नगर में सूर्य और चाँद के उजियाले की आवश्यकता नहीं, क्योंकि परमेश्वर के तेज से उस में उजियाला हो रहा है, और मेम्ना उसका दीपक है। (प्रकाशितवाक्य 21:9-11, 22-23)**

मसीह के महिमामय पुनरागमन में सभी वस्तुओं की पूर्णता से पहले परमेश्वर ने अपने छुड़ाए हुए लोगों को अपने राज्य के विस्तार का कार्य करने की बुलाहट दी है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पुराने नियम के विश्वासियों द्वारा किया गया प्रत्येक प्रयास परमेश्वर के महान राज्य की योजना की सेवा में था।

परमेश्वर के राज्य के इस पृथ्वी पर आने का यह बाइबल का दर्शन एक सर्व-व्यापक संश्लेषित धर्मवैज्ञानिक संरचना की रचना करता है जो हमें इतिहास में परमेश्वर के प्रकाशनों को समझने में सहायता करती है। उसके राज्य की योजना उन सब बातों की पृष्ठभूमि में पाई जाती है जो कुछ उसने पुराने नियम में कहा और किया है। परमेश्वर अपने स्वरूप के द्वारा संपूर्ण पृथ्वी पर अपने राज्य के फैलाए जाने से महिमा प्राप्त करेगा। ये संश्लेषित धर्मवैज्ञानिक संरचना पुराने नियम के सारे ईश्वरीय प्रकाशनों के तार्किक संगठन को समझने में हमारी सहायता करती है।

यह देखने के लिए कि यह जटिल धर्मवैज्ञानिक संगठन पुराने नियम के इतिहास के विशेष हिस्सों को और अधिक स्पष्टता के साथ समझने में हमारी कैसे सहायता करता है, आइए एक बार फिर से हम उत्पत्ति 2 में हव्वा की सृष्टि के उदाहरण पर विचार करें। हम देख चुके हैं कि परमेश्वर ने ऐसा बहुत कुछ किया और कहा है जो विभिन्न तरीकों में तार्किक रूप से परस्पर संबंधित था। हम यह भी देख चुके हैं कि वाचाई गतिकी की तार्किक व्यवस्था इस तथ्य की ओर हमारे ध्यान को आकर्षित करती है कि परमेश्वर ने आदम के प्रति काफी परोपकारिता दिखाई, कि उसने आदम को विश्वासयोग्य रहने की बुलाहट दी, कि आदम ने अपनी कुछ जिम्मेदारियों को पूरा किया, और कि आदम को तब आशीष मिली जब परमेश्वर ने हव्वा को उसके उपयुक्त सहायक के रूप में रचा।

परंतु इन धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को देखना चाहे जितना भी सहायक हो, हमारे सामने अभी भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न शेष है। परमेश्वर ने यह सब क्यों किया? उसका परम उद्देश्य क्या था? इन प्रश्नों का उत्तर परमेश्वर के राज्य के धर्मविज्ञान में पाया जाता है।

जैसा कि हम कह चुके हैं, उत्पत्ति 1 में आरंभ से ही परमेश्वर ने मनुष्यजाति को अपने संसार में एक विशेष भूमिका प्रदान की थी। उसके स्वरूप के रूप में, मनुष्यजाति को ऐसा धर्मी माध्यम होने के लिए बुलाया गया था जिसके द्वारा परमेश्वर का स्वर्ग या राज्य इस पूरे संसार में फैल जाए। परंतु आदम अपने आप से राज्य के अपने मिशन को पूरा नहीं कर पाया। एक अकेला व्यक्ति संख्या में बढ़ नहीं सका और संपूर्ण पृथ्वी पर राज्य नहीं कर सका। इसलिए, परमेश्वर ने आदम को एक उपयुक्त सहायक देकर आशीषित किया जो परमेश्वर के राज्य में अपनी भूमिका को पूरा करने के लिए उसे सक्षम बनाएगी। आदम के साथ हव्वा के आने से, परमेश्वर का स्वरूप संख्या में बढ़ सकेगा, परमेश्वर के महिमामय राज्य के लिए पृथ्वी को तैयार करने हेतु बड़ी सँख्या में आगे बढ़ सकेगा। जब हम इस जटिल धर्मवैज्ञानिक संरचना की पृष्ठभूमि में हव्वा की सृष्टि को देखते हैं, तो हम देख सकते हैं कि उसकी सृष्टि पूरे संसार को परमेश्वर के राज्य में बदलने की ओर एक महत्वपूर्ण कदम थी।

अतः हम देखते हैं कि पुराने नियम के इतिहास की अवधियाँ कई स्तरों पर संश्लेषित धर्मवैज्ञानिक संरचनाओं को दर्शाती हैं। मूलभूत स्तर पर, हमने देखते हैं कि परमेश्वर के कार्य और वचन कैसे परस्पर संबंधित होते हैं। जब हम हमारे दृष्टिकोण को मध्यम स्तर की संरचनाओं, जैसे ईश्वरीय वाचाओं, की ओर बढ़ाते हैं, तो हम देख सकते हैं कि परमेश्वर के प्रकाशनों के समूह कैसे विस्तृत धर्मवैज्ञानिक व्यवस्थाओं के तर्क में उपयुक्त बैठते हैं। और जब हम परमेश्वर का राज्य जैसी और भी अधिक विस्तृत संश्लेषित संरचनाओं को लागू करते हैं, तो हम पाते हैं कि ईश्वरीय प्रकाशन की स्पष्टता और भी अधिक स्पष्ट हो जाती है।

उपसंहार

इस अध्याय में हमने अध्ययन किया है कि कैसे बाइबल आधारित धर्मविज्ञानी पुराने नियम के धर्मविज्ञान के समकालिक संश्लेषणों की रचना करते हैं। हमने ध्यान दिया कि समकालिक संश्लेषण पुराने नियम के इतिहास के विशेष समयों के दौरान परमेश्वर के कार्य और वचन प्रकाशनों का विवरण है। हमने उन तरीकों पर भी ध्यान दिया है जिनके द्वारा पुराने नियम की विभिन्न शैलियों से ऐतिहासिक जानकारी को प्राप्त किया जा सकता है। और हमने देखा कि इतिहास की एक अवधि के दौरान परमेश्वर के प्रकाशन की संश्लेषित धर्मवैज्ञानिक संरचना को विविध स्तरों में कैसे समझा जाता है।

पुराने नियम के धर्मविज्ञान के समकालिक संश्लेषण की रचना करना बाइबल आधारित धर्मविज्ञान का एक महत्वपूर्ण आयाम है। जब हम यह समझ जाते हैं कि परमेश्वर ने अपने वचनों और कार्यों के द्वारा पुराने नियम के इतिहास की विशेष अवधियों के दौरान क्या प्रकट किया है, तो हम इस विषय का अध्ययन करने के लिए और भी अधिक सक्षम होंगे कि पूरी बाइबल में धर्मविज्ञान का विकास कैसे हुआ।